रजिस्ट्रेशन संख्या - 461, Date 15/06/2020

सबके लिए सरकारी शिक्षा-बेहतर हो हमारी शिक्षा

शिक्षा सौरभ

(ई-पत्रिका)

प्रधान सम्पादक - श्री राम शर्मा 'परिंदा'

प्रकाशक - नवोदय क्रांति परिवार मध्यप्रदेश

शिक्षा सौरभ ई-पत्रिका

अंक - 1
वर्ष - 1
प्रकाशन- सित. 2020

संस्थापक
श्री गुरुजी संदीप ढिल्लो
नवोदय क्रांति परिवार भारत

मार्गदर्शक
डॉ. दशरथ मसानिया
व्याख्याता
आगर (मालवा) म.प्र.
एवं
श्री गोपाल कौशल
शिक्षक (जिला-धार)
नागदा (धार)

प्रधान सम्पादक
श्री राम शर्मा परिंदा
मनावर (जिला-धार)

संपादक
श्री रघुवीर सोलंकी
बड़वानी

सह संपादक
डॉ. जगदीश चौहान
मनावर (जिला-धार)
डॉ. रजनी पाण्डेय
इंदौर
श्री विनोद सोनगीर
इंदौर
श्री मन्नालाल सोलंकी
बड़वानी

मुख्य पृष्ठ
श्री संतोष धनवारे
शिक्षक एवं बीएसी
नसरुल्लागंज (सीहोर)

प्रधान संपादक की कलम से....

प्रिय साथियो !

म. प्र. से पहली ई-पत्रिका का बीजारोपण किया जा रहा है। इस हेतु समस्त शिक्षक साथियों ने इस ई-पत्रिका के बीज के लगाने से लेकर अंकुरित करने,पल्लवित करने, फल-फूल से युक्त करने तथा उसे यथावत् बनाए रखने के संकल्प के माध्यम से अपनी अहम् भूमिका निभाई। इस पत्रिका का भी वही उद्देश्य है, जो नवोदय क्रांति का है; जिसके अंतर्गत सरकारी शिक्षा को इतना अच्छा बना दिया जाये कि पालक व बालक स्वतः ही इस ओर आकर्षित हों। छात्रों को शिक्षण देने का ढंग इस प्रकार का रहे कि उसे रविवार व अन्य अवकाश के दिन अपने घर पर खलने लगे,तभी हमारा यह सूत्र - वाक्य " सबके लिए सरकारी शिक्षा, बेहतर हो हमारी शिक्षा " पूर्ण होगा। वह अपने जीवन के मूल उद्देश्य को बारहखड़ी और वर्णमाला सीखते-सीखते ही निश्चित कर ले। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हम सभी साथियों को नये-नये प्रयत्न समर्पण के भाव से करने होंगे। हमें अपने मस्तिष्क से अपने विद्यालय में आने वाले गरीब छात्र/छात्राओं के भौतिक-स्वरूप की ओर से दृष्टि हटाकर उनके आंतरिक-स्वरूप को निखारने का महत्त्वपूर्ण कार्य करना होगा। तत्पश्चात् उसके भौतिक-स्वरूप को व्यवस्थित करने का काम भी तन-मन व धन से हमें ही करना होगा। बदलती परिस्थितियों में हमें स्वयं को बदलना होगा, तभी हम सरकारी शिक्षा - तंत्र को परिवर्तित कर सकते हैं। इस हेतु हमारा बच्चों से लगाव होना अत्यंत आवश्यक है। तब ही हम उनके उज्ज्वल भविष्य की कल्पना कर सकते हैं और फिर अपने नवाचारी प्रयत्नों से उसे साकार कर सकते हैं। हमें बच्चों के साथ - साथ अपने शिक्षक साथियों को भी प्रेरित करना होगा। वे साथी बहुत से नवाचार कर सकते हैं, लेकिन उत्प्रेरण के अभाव में और उपयुक्त सहयोग न होने के कारण आत्म-संकुचित रह जाते हैं। यह ई-पत्रिका अपने इन्हीं दोनों उद्देश्यों को प्राप्त हो, हमारे सभी शिक्षक साथियों से ऐसी ही अपेक्षा है। इसी विश्वास के बल पर मैं यह महत् शिक्षा-यज्ञ की प्रथम आहुति आप सभी को सादर समर्पित कर रहा हूँ ..आपके बहुमूल्य सुझावों का इंतजार रहेगा।

प्रधान संपादक
राम शर्मा 'परिंदा'

नवोदय क्रांति परिवार और शिक्षक

प्रिय शिक्षक साथियो ! नवोदय क्रांति परिवार भारत के समस्त समर्पित सरकारी अध्यापकों का ऐसा समूह है, जिसका लक्ष्य है - देश में शिक्षा के लिए एकमात्र बेहतर विकल्प के रूप में सरकारी स्कूलों को स्थापित करना , ताकि पूरे देश में एक समान शिक्षा व्यवस्था हो और देश के हर अमीर-गरीब के लिए आगे बढ़ने के अवसर समान रूप से खुले हों।

हमें पूर्ण विश्वास है कि हम सभी मिलकर जल्दी ही इस लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे। गत 3 वर्षों से नवोदय क्रांति के मोटिवेटर ऑनलाइन शिक्षण -प्रशिक्षण, मैन्युअल प्रशिक्षण, सहायक सामग्री निर्माण, राष्ट्रीय कार्यक्रम, ई-अभ्यास पुस्तिका निर्माण, स्मार्ट क्लास व स्मार्ट स्कूल, दिन विशेष, ऑनलाइन क्लास, महत्त्वपूर्ण दिवस आयोजन, सामुदायिक सहयोग को बढ़ावा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण आदि विभिन्न विषयों पर कार्य कर रहे हैं।

भारत के लगभग सभी राज्यों के शिक्षकों के साथ-साथ विदेशों में भी नवोदय क्रांति परिवार के ब्रांड एम्बैस्डर हैं, जो हमें प्रेरित करते हैं। अध्यापकों व बच्चों के लिए शिक्षण- प्रशिक्षण के साथ-साथ लेखन, साहित्यिक गतिविधियों, नवाचारों की अभिव्यक्ति को भी सुदृढ़ मंच प्रदान किया जा रहा है, जिसके तहत नवोदय क्रांति सामयिक पत्रिका शृखंला, काव्य पत्रिका श्रंखला तैयार की जा रही है।

इसी कड़ी में मध्य प्रदेश के बेहतरीन शिक्षकों द्वारा किए जा रहे रचनात्मक नवाचार गतिविधि 'ई-पत्रिका' शिक्षा जगत् के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। इस पत्रिका के सम्पादक मंडल व मार्गदर्शक मंडल के सभी आदरणीय साथियों के प्रयासों को नमन करता हूँ और प्रत्येक नवाचारी शिक्षक, जिसका लेख इसमें शामिल हुआ है; उसको बधाई देता हूँ। नवोदय क्रांति परिवार मध्यप्रदेश के सभी ऊर्जावान अध्यापक साथियों को इस नई परिपाटी की शुरुआत को आने वाले समय में सभी राज्यों में अपनाया जाएगा।

नवोदय क्रांति परिवार भारत के समस्त समर्पित सरकारी अध्यापक, राष्ट्र भक्त नागरिक, शिक्षाविद् समाजसेवी व्यक्ति व संस्था, अभिभावक, विभिन्न क्षेत्रों में सेवा दे रहे अधिकारी-कर्मचारी आदि सभी से आह्वान करता है कि सरकारी शिक्षा उत्थान के इस नेक-मिशन को सफल बनाने के लिए नवोदय क्रांति परिवार को सहयोग व समर्थन दें, क्योंकि यदि हम सभी इस मिशन में सफल होते हैं; तो देश की तमाम समस्याओं जैसे बेरोजगारी, अनपढ़ता, भ्रष्टाचार, पर्यावरण-असंतुलन,सामाजिक असमानता, आर्थिक असमानता, भूखमरी आदि का समाधान स्वतः हो जाएगा।

"सबके लिए सरकारी शिक्षा- बेहतर हो हमारी शिक्षा" इसी ध्येय वाक्य के साथ नवोदय क्रांति परिवार अपना कार्य कर रहा है।

संदीप ढिल्लो
संस्थापक
नवोदय क्रान्ति परिवार भारत

शुभकामना संदेश-पत्र

समाज में शिक्षा और शिक्षक की अहम् भूमिका है । जिस देश-प्रदेश में शिक्षक नवाचारी, कुशल ,सक्रिय और कर्त्तव्य परायण हैं, वह देश और प्रदेश कई मायनों में संस्कृति और उन्नति का द्योतक होकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व चहुँमुखी विकास के लिए नए रास्तें ईज़ाद करता है। मुझे यह सुनकर अपार प्रसन्नता हुई कि सरकारी शिक्षा को बेहतर बनाने के संकल्प के साथ नवोदय क्रांति परिवार संपूर्ण भारत के सभी राज्यों में शिक्षा में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहा है और विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा स्वप्रेरणा से अपने नवाचारों के द्वारा शैक्षिक गुणवत्ता , शाला-सिद्धि और 'अब पढ़ाई नही रुकेंगी' जैसे विचारों पर अनुकरणीय, प्रेरक-प्रयासों और कार्यों का संकलन कर " शिक्षा सौरभ " पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है, जो समाज और शिक्षा-जगत् में मील का पत्थर साबित होगी।

मेरी शुभकामनाएँ हैं कि नवोदय क्रांति परिवार मध्यप्रदेश की 'शिक्षा सौरभ ई-पत्रिका' प्रदेश सहित देशभर के विद्यालयों में शैक्षिक गुणवत्ता में पथ-प्रदर्शक बनकर शिक्षकों में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करे।

दिनांक : 24 अगस्त, 2020

डॉ.अशोक कुमार पारीख
उप संचालक
राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल, म.प्र.

शुभकामना संदेश-पत्र

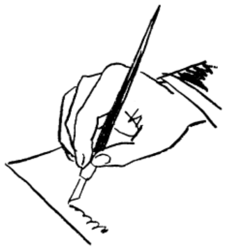

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि नवोदय क्रांति परिवार मध्यप्रदेश ई-पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है। ई-पत्रिका प्रकाशन का उद्देश्य म.प्र. के नवाचारी शिक्षकों के नवाचारों और बाल साहित्य को सम्पूर्ण भारत में पहुँचाने की पहल सराहनीय है, जो कि सभी शिक्षकों को नवाचारी शिक्षा के लिए प्रेरित करेगी । नवोदय क्रान्ति परिवार द्वारा देश में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु शिक्षकों द्वारा किए जा रहे नवाचारों को प्रोत्साहित कर महत्त्वपूर्ण योगदान देने के लिए ई-पत्रिका का प्रकाशन मील का पत्थर साबित होगा। इस अवसर पर नवोदय क्रान्ति परिवार से जुड़े हुए समस्त शिक्षकों को मेरी ओर से शुभकामनाएँ प्रेषित है।

(मनीष वर्मा)
संयुक्त संचालक
लोक शिक्षण संभाग, इन्दौर

शुभकामना संदेश-पत्र

अपार प्रसन्नता का विषय है कि नवोदय क्रांति परिवार मध्यप्रदेश शिक्षकों के नवाचारों और कार्यों को प्रकाश में लाने हेतु 'शिक्षा सौरभ ई- पत्रिका' का प्रकाशन कर रहा है, जो काफी प्रशंसनीय , प्रेरणादायी और महत्त्वपूर्ण कार्य हैं |

'शिक्षा सौरभ ई- पत्रिका' की पूरी टीम को मेरी तरफ से बहुत - बहुत बधाई के साथ हार्दिक शुभकामनाएँ|

जे.के. शर्मा
पूर्व संयुक्त संचालक इंदौर
पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी
धार (मध्यप्रदेश)

अत्यंत हर्ष का विषय है कि विषम परिस्थितियों में भी नवोदय क्रांति परिवार द्वारा शिक्षा में नवाचार विषय पर शिक्षा सौरभ ई- पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। निश्चित ही यह ई- पत्रिका समय अनुकूल निर्णय , दूरदर्शिता , सकारात्मक संदेश से परिपूर्ण होगी। ई- पत्रिका प्रदेश और देश को अपना सार्थक संदेश देकर निरंतर प्रगति करें। यही शुभकामनाएँ।

हीरालाल खुशाल
विकास खंड शिक्षा अधिकारी
इंदौर, मध्यप्रदेश

पत्रिका समाज का दर्पण होती हैं निश्चित ही नवोदय क्रांति परिवार मध्यप्रदेश द्वारा शासकीय स्कूलों मे बेहतर कार्य करने वालें नवाचारी ,समर्पित शिक्षकों के कार्यों को " शिक्षा सौरभ ई- पत्रिका " के माध्यम से देश-दुनिया के पटल पर सुशोभित करने का प्रयास सराहनीय है। मेरी हार्दिक बधाई - शुभकामनाएँ।

जी.एस. चौहान
विकासखंड शिक्षा अधिकारी
बदनावर, मध्यप्रदेश

नवोदय क्रांति परिवार मध्यप्रदेश द्वारा सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के प्रयासों ,नवाचारों एवं बाल साहित्य को " शिक्षा सौरभ ई- पत्रिका " में प्रकाशित कर देशभर में प्रज्ज्वलित करने का प्रयास प्रशंसनीय हैं। मेरी हार्दिक बधाई - शुभकामनाएँ।

कमल सिंह ठाकुर
जिला परियोजना समन्वयक
जिला शिक्षा केंद्र धार म.प्र.

संदेश - पत्र

आत्मीय मित्र और पत्रिका के संपादक श्री राम शर्मा परिंदा जी
सादर अभिवादन

मित्रवर गोपाल कौशल जी का संदेश प्राप्त हुआ। आपने नवोदय क्रांति परिवार द्वारा प्रकाशित होने वाली अपनी शिक्षक नवाचार के विषय से जुड़ी ई- पत्रिका शिक्षा सौरभ हेतु मुझसे संदेश की अपेक्षा की थी।

शिक्षा क्षेत्र, बाल पत्रकारिता और बाल मनोविज्ञान से लगभग तीन दशक से जुड़ा होने के कारण यह विषय वैसे भी मेरे हृदय के अत्यंत निकट है। विशेषकर शिक्षण कार्य को बोझिल बनाती शिक्षा पद्धति से 'साँप-केंचुल' की तरह मुक्त हो जाने को छटपटाते विद्यार्थियों की नई पीढ़ी को देखकर मन में कहीं-ना-कहीं एक ही कष्ट होता था कि कैसे बच्चों का पाठ्यक्रम और उनकी शिक्षा नवाचारी हो और उन्हें सहज-सरल ढंग से खेल-खेल में ज्ञान की प्राप्ति होती चले। दुर्भाग्य से विदेशी भाषाओं के माध्यम ने कहीं-ना-कहीं हमारी नई-पौध को मानसिक रूप से पंगु बनाने का काम किया है। ऐसे में शिक्षा जगत् में आप सब मिलकर जो नवाचार कर रहे हैं, वह अमूल्य है। शिक्षा पद्धति का सबसे बड़ा दोष ही मुझे जो दिखाई देता है, वह यह कि 'एज्यूकेशन' शब्द मूलतः 'इड्यूज़' शब्द से बना हुआ है। उसका अर्थ होता है- आंतरिक ज्ञान का प्रकटीकरण, जबकि पश्चिम जगत् से आयात कर हम सब पर थोपी गई शिक्षा पद्धति 'इंड्यूज़' अर्थात् बाहर से लाकर बच्चे में आपूरित कर देने वाली शिक्षा। ये दो परस्पर विपरीत भाव लिए हमारी शिक्षा पद्धति पता नहीं कौन-सी पटरी पर दौड़ी चली जा रही थी? सौभाग्य से नई शिक्षा-नीति ने हमारे बच्चों को न केवल स्कूल शिक्षा के समय से ही 'स्किल डेवलपमेंट' और अपनी वृत्ति अर्थात् 'केरियर' की दिशा में बढ़ने के लिए प्रारंभ से ही रुचिकर वातावरण उपलब्ध कराने का एक अति उत्तम उपक्रम प्रस्तावित किया है। नई पीढ़ी के बच्चों को हमें तर्क शुद्ध और विज्ञान सम्मत बनाने की आवश्यकता है।

प्राचीन मान्यताओं को नवाचारों के माध्यम से ही अद्यतन किया जा सकता है। हमें यह तो पढ़ाना होगा कि 'चंदन विष व्यापत नहीं लिपटे रहत भुजंग', किंतु साथ ही यह भी बताना होगा कि साँप प्रत्येक खुरदरी सतह वाले पेड़ पर चढ़ सकता है; केवल चंदन का पेड़ ही उसका आसरा नहीं होता। बच्चों को यह भी बताना होगा कि विश्व में ऐसा कोई चकोर पक्षी नहीं होता, जो वर्ष के 365 दिन चाँद को ही ताकता रहे और ना ही ऐसा कोई चातक पक्षी अस्तित्त्व में है, जो केवल स्वाति नक्षत्र की बूँद को सीधे आसमान से अपनी चोंच में ग्रहण करता है। आज के बच्चों को यह बताने में भी हमें बिल्कुल संकोच नहीं करना है कि कविता में भले ही हम गाते रहें 'कोयल गाती है', किंतु वास्तव में कोयल गाता है; क्योंकि केवल नर कोयल की ही आवाज मधुर होती है, मादा कोयल का स्वर अत्यंत कर्ण-कटु होता है। आप सब नवाचार के जिस विशिष्ट उपक्रम में लगे हैं, वह निश्चय ही भारत की आने वाली पीढ़ी को एक विज्ञान सम्मत और तर्क शुद्ध पीढ़ी बनाने में सक्षम सिद्ध होगा। आइए, हम सब मिलकर बच्चों की संवेदना जाग्रत करने का प्रयास करें; ताकि आने वाले समय में वह अपने माता-पिता, घर के बुजुर्गों और साथ ही शिक्षकों के सम्मान को अपने सम्मान से अधिक मूल्यवान समझने लगें। यदि हम सब यह करने में सफल हुए, तो निश्चय ही भारतीय संस्कृति के प्रति यह आप सब शिक्षकवृन्द का अत्यंत बड़ा उपकार होगा।

धन्यवाद.. आभार....।

ई -पत्रिका शिक्षा सौरभ के लिए मेरी ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ स्वीकारें

आपका

डॉ. विकास दवे

निदेशक मध्यप्रदेश साहित्यिक अकादमी, भोपाल

शुभकामना संदेश-पत्र

अत्यंत हर्ष का विषय है कि नवोदय क्रांति परिवार मध्यप्रदेश द्वारा ई–पत्रिका शिक्षा सौरभ का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका में शिक्षकों द्वारा किये गये नवाचारों को सम्मिलित किया गया है। सम्पादक मण्डल द्वारा यह प्रयास किया गया है कि इन नवाचारों से प्रदेश ही नहीं, वरन् देश के अधिक–से–अधिक शिक्षक अवगत हो सकें तथा हमारी शालाओं के विद्यार्थी लाभान्वित हो सके।

'क्रान्ति' शब्द का अभिप्राय है कि स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन कर कुछ नया कार्य करना। नवोदय क्रान्ति परिवार मध्यप्रदेश द्वारा शिक्षकों की प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने कार्य प्रशंसनीय है। समाज में शिक्षकों की भूमिका प्रमुख है। शिक्षक युग निर्माता एवं भावी पीढ़ी के लिए पथ–प्रदर्शक है। शिक्षक ज्ञान के रूप में वर्षों तक समाज का मार्गदर्शन करता है।

नवोदय क्रान्ति परिवार मध्यप्रदेश के मंच से शिक्षकों की प्रतिभाएं पुष्पित एवं पल्लवित होती रहें एवं विद्यार्थियों का विकास होता रहे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ ।

डॉ. साधना भवर
वरि. व्याख्याता एवं
प्रशिक्षण प्रभारी
डाइट बड़वानी

एम.एल. वास्कले
प्राचार्य
डाइट बड़वानी

नवोदय क्रान्ति परिवार मध्यप्रदेश का नया अध्याय

नवोदय क्रांति परिवार विगत तीन वर्षों से गुणवत्तायुक्त-शिक्षण के लोक-व्यापीकरण के लिए निरंतर प्रयासरत् है। जहाँ एक ओर शिक्षण-प्रशिक्षण है, तो दूसरी ओर शिक्षकों द्वारा किए जा रहे नित नवाचारों का सिलसिला भी जारी है। इसी कड़ी में मध्य प्रदेश के हमारे युवा साहित्यकार शिक्षकों द्वारा किए जा रहे रचनात्मक नवाचार गतिविधि 'ई-पत्रिका' शिक्षा जगत् के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। ऐसा मेरा विश्वास है। मैं इस शुभ अवसर पर सर्वश्री गुरुजी संदीप ढिल्लो, गोपाल कौशल जी, श्री राम शर्मा परिन्दा, रघुवीर सोलंकी तथा सभी सहयोगी साथियों का हृदय से स्वागत करता हूँ, जिन्होंने जी जान से मेहनत कर मध्यप्रदेश में शिक्षा का एक नया अध्याय प्रारंभ किया है।

डॉ. दशरथ मसानिया
व्याख्याता हिंदी
आगर मालवा मध्य प्रदेश म.प्र.

****

कौशल की कलम से...

जिस तरह आकाश को छूती गगनचुंबी इमारतों का वजूद मज़बूती पर टिका होता हैं, उसी तरह शिक्षा भी संपूर्ण राष्ट्र की आधारशिला है। हमें इस बात पर भरोसा रखना चाहिए कि **कोशिश करने वालों की हार नहीं होती** एक नई सुबह हमारे इंतजार में है। इसी का परिणाम है कि हमारे शिक्षक साथी नए-नए शैक्षिक विचारों, नवाचारों से शिक्षा को बेहतर बनाने में लगे हुए हैं।

नवोदय क्रांति परिवार मध्यप्रदेश द्वारा 'ई -पत्रिका' **शिक्षा सौरभ** का प्रकाशन इसी उद्देश्य को लेकर किया जा रहा है, जिसके माध्यम से हम दूरस्थ अंचलों में अपने नवाचारी प्रयासों के बल पर ऊर्जा के साथ विद्यालय का भौतिक परिवेश बदलने तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देकर समाज,समुदाय में एक आदर्श रूप प्रस्तुत करने वाले ऐसे शिक्षक, कर्मवीर साथियों के नवाचारों, बाल साहित्य सृजन और विचारों को प्रदेश- देश - दुनिया तक **शिक्षा सौरभ** की आभा से पहुँचाने की प्रथम कोशिश है। इस कोशिश को अमलीजामा नवोदय क्रांति परिवार के संस्थापक संदीप ढिल्लो, स्टेट मोटिवेटर साहित्यकार राम शर्मा परिंदा, रघुवीर सोलंकी, संतोष धनवारे बीएससी नसरुल्लागंज सिहोर,वरिष्ठ शिक्षिका डॉ. श्रीमती रजनी पाण्डेय, विनोद सोनगीर, डॉ. जगदीश चौहान और मन्नालाल सोलंकी के सहयोग से यह कार्य पूर्ण करने में सफल हो पाएँ हैं।

कोरे पन्ने पर लिखनी है
देश राष्ट्र की विकास गाथा।
कोई बच्चा छूट न पाए
ये है भारत भाग्य-विधाता।।

गोपाल कौशल
प्राथमिक शिक्षक साहित्यकार
शा.नवीन प्रा. वि. नयापुरा, माकनी

संपादक मंडल की ओर से--

नवोदय क्रांति से जुड़ने के बाद मन में हर दिन कुछ-न -कुछ नवीन कार्य करने की स्व-प्रेरणा मिलती रही । अभी इस कोरोना काल में जो लॉकडाउन हुआ, उसमें बहुत से नवाचार सीखने में आये । ऑनलाइन मीटिंग, कवि सम्मेलन, बेविनार इस प्रकार के कई कार्य किये। चूँकि मेरी रुचि कम्प्यूटर में बहुत अधिक है, इसलिए ये सारे नवाचार मुझे बहुत अच्छे लगे।इस व्यवस्था ने हमें अपने ज्ञान को बढ़ाने में बहुत सहायता की। हमारे शिक्षक साथी भी इस प्रकार के नये-नये नवाचार करते रहे हैं और अपने विद्यालय के छात्रों को सरलता से ज्ञान ग्रहण करने में सहयोग करते रहे हैं। सभी शिक्षक साथियों को 'ई-पत्रिका' के माध्यम से कई नवाचारों को आदान-प्रदान करने का सुअवसर प्राप्त होगा। इन्हीं भावों के साथ......

रघुवीर सोलंकी
बड़वानी मो. 9981783828

****

सह संपादक मंडल की ओर से--

नवोदय क्रांति के मोटिवेटर के रूप में कहीं मन में एक बात खटकती रही है कि इन नवाचारों का संग्रहण और फैलाव दोनों ही होना चाहिए। मन की साध जब 'ई-पत्रिका' के रूप पूर्ण हुई, तो मन की प्रसन्नता का पारावार नहीं रहा। इस महत्त्वपूर्ण कर्म में मैं तल्लीन हो गया। स्थान-स्थान से शिक्षक साथियों की नवाचार से संबंधित रचनाएँ आने लगी। जब आने वाले नवाचारों को पढ़ा, तो ज्ञात हुआ कि हमारे शिक्षक साथी अपने स्तर से दूर-दराज के गाँवों में ,पहाड़ियों में स्थित विद्यालयों में अपने ज्ञान का दीप जलाए हुए हैं। अब उनके सारे दीप एक स्थान पर एकत्र हो रहे हैं - 'शिक्षा-सौरभ ई-पत्रिका' के रूप में। अब उसके प्रकाश से शिक्षा-जगत् में निश्चित रूप से दीपावली का उत्सव होगा। यह दीपोत्सव हम निरंतर मनाते रहें ... इन्हीं शुभकामनाओं के साथ...

मन्नालाल सोलंकी
बड़वानी

सह संपादक मंडल की ओर से--

डॉ.जगदीश चौहान
मनावर (जिला-धार)

नवोदय क्रांति ने एक नया बीड़ा उठाया है और वह है- 'शिक्षा-सौरभ ई-पत्रिका'। इसमें शिक्षकों द्वारा किए जाने वाले विभिन्न स्तर के नवाचारों की महत्त्वपूर्ण जानकारी संग्रहित करके एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया गया है। सभी साथियों ने अपने अथक् प्रयास से इन नवाचारों को प्रयोग में लाकर उससे होने वाले लाभ की जानकारी भी प्रस्तुत की है। सभी नवाचार देश ,काल और परिस्थितियों के अनुरूप किए गए हैं, लेकिन फिर भी हम सभी का यह मानना है कि यदि हमारे सभी शिक्षक साथी इनको अपनायेंगे, तो निश्चित रूप से शासकीय विद्यालयों तथा विद्यार्थियों दोनों की दशा-दिशा ही बदल जायेगी।इन्हीं शुभकामनाओं के साथ....

****

सह संपादक मंडल की ओर से--

डॉ. रजनी पाण्डेय
इंदौर

नवोदय क्रांति परिवार मध्यप्रदेश की ओर से 'शिक्षा सौरभ ई-पत्रिका' के रूप में आपके सम्मुख प्रेषित है। यह हमारे प्रधान संपादक व संपादक मंडल का अथक् प्रयास तो है ही, साथ ही इसमें समस्त शिक्षकों व जागरूक रचनाकारों का भी महत्तवपूर्ण योगदान है। नवाचार के मोहक गुलदस्ते में एक पुष्प मेरा भी जागरूकता शब्द के संदेश को चरितार्थ करता हुआ -

जा - जाएँ मंजिलों की ओर
ग - गगन से ऊँचा इरादा लेकर
रु - रुके ना हम अपने ध्येय को लेकर
क - कल्याण करें समाज का
ता - ताकि जन-जन का विकास हो...

इन्हीं भावों के साथ!

****

सह संपादक मंडल की ओर से--

विनोद सोनगीर
इंदौर

यह मेरे लिए अत्यंत गर्व और हर्ष का विषय है कि नवाचारी शिक्षकों के नवाचार और बाल साहित्य के प्रकाशन के लिए नवोदय क्रांति परिवार मध्यप्रदेश के प्रथम 'ई-पत्रिका' के लिए मुझे नवोदय क्रांति परिवार ने सह संपादक जैसा महत्तवपूर्ण दायित्व सौंपा। 'ई-पत्रिका' के माध्यम से सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के नवाचार और बाल साहित्य का प्रसार सम्पूर्ण भारत में होगा और इसका सभी को लाभ होगा। इस वृहद् महायज्ञ का प्रतिफल यह 'शिक्षा-सौरभ ई-पत्रिका' आपके सम्मुख प्रस्तुत है। आपके सुझावों और प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में...

नवाचार और शिक्षक का दायित्त्व

हर शिक्षक-प्रशिक्षण में नवाचार के सम्बन्ध में चर्चा होती ही है। विद्यालय स्तर पर शिक्षक के द्वारा किए गए कार्य अन्य शिक्षकों के साथ साझा किए जाते हैं। इस तरीके से शिक्षक एक दूसरे के अनुभवों से सीखते हैं। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने विद्यालय में नवाचार करें और अपने विद्यालय के बच्चों का शैक्षिक स्तर उन्नत करें।

यह तो हम जानते ही हैं कि नवाचार शब्द नव और आचार शब्द के योग से बना है। इसका अर्थ नया आचार, नई प्रक्रिया, नया विचार। नवाचार के अन्तर्गत किसी विशिष्ट उद्देश्य से कुछ नया कार्य किया जाता है। विद्यालय के सन्दर्भ में देखें, तो बच्चों के सीखने का स्तर बढ़ाने के लिए किया गया हर नया कार्य नवाचार है। विद्यालय में प्रार्थना करवाना, कतारबद्ध बच्चों को बैठाना, शिक्षक द्वारा बोर्ड पर लिखना, बच्चों को कॉपी में नकल करवाना, गिनती पहाड़े रटवाना आदि पारम्परिक तरीके है। यदि किसी शिक्षक को लगता है कि यह बच्चों के लिए अरुचिकर है और इनसे सीखने की गति धीमी है, तो शिक्षक अपने स्तर से बैठक व्यवस्था में बदलाव, कार्ड, गीत या किसी खेल के माध्यम से सीखने का स्तर प्राप्त करने का प्रयास करता है; तो यह नवाचार है। यह भी संभव है कि एक विद्यालय का नवाचार किसी दूसरे विद्यालय के लिए प्रभावी न हो; क्योंकि हर विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या,शिक्षकों की संख्या कक्षों की संख्या, मैदान की स्थिति भिन्न-भिन्न है। इसीलिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहायक सामग्री या गतिविधियाँ सुझावात्मक ही बताई जाती है। शिक्षक अपनी ओर से शैक्षिक उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए गतिविधियाँ करने या सहायक सामग्री का उपयोग करने के लिए स्वतन्त्र है। वर्तमान में ऐसी परिस्थितियाँ नहीं है कि विद्यालयों में अध्यापन हो सके।

इस स्थिति में 'हमारा घर हमारा विद्यालय' के अन्तर्गत राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा बहुत से वीडियो व फ्लिप बुक तैयार कर शिक्षकों को भेजी जा रही है। यह भी एक नवाचार है, क्योंकि ऐसा पहले कभी नहीं सोचा गया था। इसमें भेजी जाने वाली फ्लिप बुक को एक शिक्षक गोपाल कौशल ने बोलती हुई कार्टून फिल्म में बदल दिया। इससे पढ़ने के साथ 'ई पुस्तक' का उपयोग सुनने के लिए भी होने लगा। एक शिक्षक सन्दीप शोकल ने 'बरखा सीरीज' कहानियों को पढ़ाने के साथ-साथ अपनी आवाज़ देकर वीडियो फिल्म बना ली।

एक शिक्षक इसरार कुरेशी ने बच्चों में अभिव्यक्ति की क्षमता व आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए बच्चों से कहानी या कविता सुनाते समय खिलौना माइक का प्रयोग किया। आशय यही है कि कार्य करने का तरीका नया हो और उसका उद्देश्य स्पष्ट हो। ऐसा नहीं है कि नवाचार सफल ही हो। हो सकता है कि किसी पुस्तक में पढ़कर या प्रशिक्षण में बताई विधि से आप काम करें और उसका अनुकूल परिणाम न मिले।

हर विद्यालय की परिस्थितियाँ अलग-अलग होती है। कहीं जन भागीदारी अधिक है, तो कहीं बच्चों का स्तर अच्छा है ; पर कहीं ऐसा न हो कि असफल होने के भय से हम नवाचार का न सोचें। नवाचार कोई नया कार्य करना मात्र ही नहीं है, वरन् किसी भी कार्य को नए तरीके से करना भी नवाचार है। हर शिक्षक में नवाचार की संभावनाएँ मौजूद होती हैं, लेकिन सामान्यतः शिक्षक यह मानकर चलता है कि उसका काम जैसे तैसे किताब पूरी पढ़ा देना और बच्चों को परीक्षा के लिए तैयार करना ही है।

शिक्षक को चाहिए कि विद्यालय के संसाधन, बच्चों की क्षमता, अपनी सोच और विद्यालय की परिस्थितियों का समुचित उपयोग करें, ताकि वह अपने पदीय दायित्त्वों को पूर्ण जिम्मेदारी से तो वहन करे ही; एक शिक्षित समाज और उन्नत राष्ट्र के निर्माण में भी योगदान दे सके।

जयन्त जोशी
पूर्व प्राचार्य डाइट
सह सहायक संचालक (शिक्षा)
जिला-धार (म.प्र.)

नवाचारी शिक्षक

श्री सुभाष यादव

जिनकी मिसाल है बेमिसाल नवाचारों से कर दिया कमाल। आनंददायी माहौल में रह कर खेल-खेल में सीखते हैं लाल। किसी भी विद्यालय की जीवंतता उसके विद्यार्थियों के खिले और आत्मविश्वास से भरे चेहरों से पहचानी जा सकती है। उसी प्रकार विद्यालय में सीखनें-सिखाने की जीवंतता उसके संकल्पित शिक्षक के आत्मविश्वास से साफ देखी जा सकती है।

चलिए, अब हम बात करते हैं राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक सुभाष यादव की, जो कि शासकीय प्रा.वि. कागदीपुरा, विकास खंड-नालछा, जिला-धार में पदस्थ है। अपनी उत्कृष्ट सेवा के कारण ही इनका नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। इनकी सादगी देखते ही बनती हैं। सरल-सहज स्वभाव के धनी श्री यादव स्थानीय सहायक सामग्री और अपने शिक्षण कौशल से अपनी विद्यालय के बच्चों को सहज ही विषय वस्तु समझा देते हैं।

इनके नवाचारों और शिक्षण पद्धति की मध्यप्रदेश ही नहीं, अपितु संपूर्ण देश में प्रशंसा की जाती है। कई अधिकारीगण और विद्यालयों के शिक्षकों के दल इनकी शाला का भ्रमण कर इनके शिक्षण कौशल की तारीफ कर चुके हैं। इनके विद्यालय के बच्चों द्वारा पूछे गए हर प्रश्न का जवाब बखूबी दिया जाता है। श्री यादव अक्सर कहते हैं कि पूरा माहौल बदलने के लिए सिर्फ एक सही व्यक्ति चाहिए और जिसमें माहौल बदलने का जज्बा हो, वह समर्पित कर्म कर सफलता प्राप्त कर ही लेता है।

जब भी इन्हें हम बच्चों को पढ़ाते हुए देखते हैं, तो उनके द्वारा बच्चों को सिखाने का जो तरीका है; वह हमें बहुत प्रभावित करता हैं। कक्षा-कक्ष के क्रियाकलापों में हमें किन तैयारियों के साथ बच्चों को सिखाना चाहिए, ताकि बच्चे सीखने में मग्न हो जाए और कक्षा भयमुक्त और आनंदित वातावरण में तब्दील हो जाए, यह इनसे सीखा जा सकता है।

यादव जी के नवाचारों की एक लंबी फेहरिस्त है, जो बच्चों को सीखने मे मील का पत्थर साबित हो रही है। ये कहते हैं कि नवाचार जब भी करो, मौलिक और बच्चों की समझ को सरलता से विकसित करने वाले करो। हमारे नवाचार तभी सार्थक है; जब बच्चे इनसे सीखें। इनकी शाला में 150 बच्चे दर्ज़ हैं, जिनकी शैक्षिक गुणवत्ता भी उत्कृष्ट है। इन्होंने अपने प्रयासों से कागदीपुरा को शिक्षा तीर्थ के रूप में स्थापित कर दिया, ऐसा मेरा मानना है।

आलेख–
रघुवीर सोलंकी
बड़वानी म.प्र.

जय हो सदा विजय हो-

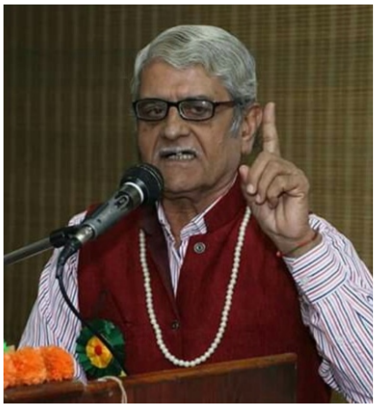

माँ शारदे तुम्हारी जय हो, सदा विजय हो।
सबके लिए जिए हम, ये भावना उदय हो।
सीखने की मन में स्वयं भावना जगाएँ।
कर्त्तव्य हम करें, पर परिणाम पर न जाएँ।
जो कुछ छिपा हृदय में ,उसका सहज उदय हो
पशु पक्षी से सीखें, हर वक्त चहचहाना।
कितनी बड़ी मुसीबत, रख धैर्य मुस्कुराना।
अच्छा जहाँ पाएँ, अंतर में वह विलय हो
आलोक ज्ञान का भी, हर ओर हो प्रकाशित।
हर कंठ से सदा ही मृदु बोल हो प्रवाहित।
तन मनः ताप हरती, बहती पवन मलय हो
छल-द्वेष का पातक मिटे, अमिट सद्भावना।
जीव का कल्याण हो,पूर्ण हो शुभकामना।
जड़ता तिमिर से निकलें,स्वीकृत यह विनय हो।---

प्रबोध मिश्र 'हितैषी'
से.नि. प्राचार्य
सुखविलास कॉलोनी, बड़वानी
(म.प्र.) 451551

नीम का पेड़

छाया इसकी बहुत है प्यारी,
छाल इसकी सबसे निराली
पत्ती भी इसकी है मतवाली
गुणों की यह खान निराली
पाती इसकी रोज़ जो खाता
सब रोगों को वो दूर भगाता
वायु में भी ये देता शीतलता
प्रदूषण को यह दूर हटाता
पतली टहनी दातुन बनाती
दाँतों की मालिश है करती
साबुन बनता प्यारा - प्यारा
खाज-खुजली नौ दो ग्यारह
कितना सुन्दर कितना प्यारा
सबसे न्यारा है नीम हमारा ॥

-रचनाकार
श्रीमती बृजबाला गुप्ता
इंदौर

****

वतन

ये हमारा वतन ये हमारा चमन
विश्व में सबसे अच्छा मेरा वतन
बहती है यहाँ यमुना और गंगा
शान हमारी है अनुपम तिरंगा
ध्वज का हरा रंग देता हरियाली
हरी-भरी धरती और खुशहाली
केसरिया रंग है गुणों की खान
ध्वज की है यह निराली शान
शांति का प्रतीक है रंग सफेद
करता नहीं है ये किसी में भेद
चक्र कहता है सदा चलते रहना
जीवन में आगे बढ़कर निखरना

सुश्री उर्मिला धुसिया
विकासखंड-बड़वारा
जिला-कटनी (मध्यप्रदेश)

****

बच्चे कुरान-गीता

बच्चों के लिए क्या कहें कविता
बच्चे रीना-रिंकू बच्चे हैं कविता
बच्चों का मन तो होता है पारस
बच्चे समन्दर और बच्चे सरिता
इनकी मुस्कान मन मोहे सबका
बिना बच्चों लगता जीवन रीता
बच्चों से सीखे जीवन की सीख
बच्चे कुरान हैं और बच्चे गीता।

रचनाकार-
कृष्णा जोशी
इंदौर

~नवाचार का नाम~

खेल-खेल में शिक्षा (कौन बनेगा करोड़पति)

संक्षिप्त विवरण - एक प्रचलित कार्यक्रम की तर्ज पर इस गतिविधि का निर्माण किया गया है । कौन बनेगा करोड़पति नामक इस गतिविधि में प्रत्येक प्रतियोगी छात्र से 10 सवाल पूछे जाते हैं। यह सवाल पाठ्यक्रम में से ही होते है। छात्र को पहले 3 सवालों के जवाब देने के बाद 3 लाइफलाइन मिल जाती है । शिक्षक उपलब्ध संसाधनों के आधार पर लाइफलाइन तय करते हैं। इस खेल में छात्र सूत्रधार की भूमिका निभाते हैं और प्रश्न पूछते हैं। शिक्षक केवल मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है।

आवश्यक सहायक सामग्री - इस खेल गतिविधि के क्रियान्वयन में किसी विशेष सहायक सामग्री की आवश्यकता नहीं है।

नवाचार के उद्देश्य - बच्चों की कक्षा में नियमित उपस्थिति बनाए रखने हेतु कक्षा का माहौल आनंदमय और भयमुक्त बनाना। विषय वस्तु की अच्छे से तैयारी करवाने का यह बहुत अच्छा माध्यम है। खेल- खेल में शिक्षा देना। सभी बच्चों को अपनी झिझक दूर करने के अवसर मिलना। सभी विषयों में बच्चों की रुचि जाग्रत करना।

क्रियान्वयन - यह खेल हम प्रति सप्ताह बालसभा के दिन आयोजित करते हैं; जिसमें प्रति सप्ताह, सप्ताहभर में पढ़ाए गए पाठ्यक्रम के आधार पर प्रश्न तैयार करते हैं और प्रश्नों के आधार पर यह खेल खेला जाता है। इस खेल में एक छात्र, जो कि सूत्रधार की भूमिका में होता है; वह पहले प्रतिभागी से प्रश्न पूछना प्रारम्भ करता है। यदि प्रतिभागी पहले 3 उत्तर सही देता है, तो वह इस खेल में आगे बढ़ता है और उसे 3 लाइफलाइन भी मिल जाती है। एक-एक करके सभी छात्रों को खेल खेलने का अवसर भी मिलता है। हमारे शिक्षक साथियों द्वारा प्रति सप्ताह विजेता छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए इनाम भी वितरित किये जाते हैं, ताकि अधिक-से-अधिक बच्चें इस कार्यक्रम में हिस्सा ले सके।

नवाचार कर्ता
हुकुमचन्द यादव
ठीकरी, जिला-बड़वानी (म. प्र.)

तिरंगा

तीन रंगों का ध्वज हमारा,
हर रंग की है बात निराली
केसरिया प्रतीक त्याग का,
सफेद रंग शांति के राग का
हरा सबको देता हरियाली,
हर रंग की है बात निराली,
बीच में चक्र का है खाका,
जिसमें है चौबीस श्लाका
जो कहता रखें खुशहाली,
हर रंग की है बात निराली ॥

कैलाश परमार
ग्राम-तलावली
तह. देपालपुर, जिला-इन्दौर

नवाचारी विद्यालय

वैसे तो सरकारी शिक्षा के क्षेत्र में कई शिक्षक व्यक्तिगत रूप से नवाचारों का उपयोग कर कुछ-न-कुछ नया करता रहते हैं, किंतु आज मैं बात करता हूँ मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले के निवाली विकास खंड के उत्कृष्ट माध्यमिक विद्यालय मसूर की। इस विद्यालय द्वारा नवाचार के क्षेत्र में कई प्रयोग किये हैं, जिससे छात्र/छात्राओं को प्रत्यक्ष लाभ हो रहा है। विद्यालय में गत सत्र किये गये नवाचार निम्न हैं:- 1 जन्मतिथि याद रखना :- हमारा क्षेत्र आदिवासी बाहुल्य है। जहाँ पर अ.ज.जा व अ.जा. जाति के लोग निवास करते हैं। हमारे विद्यालय में जो छात्र/छात्राएँ नामांकित है, उन्हें अपना जन्मदिवस याद नहीं रहता था; इसलिए हमनें एक नवाचार किया कि जिस दिन जिस छात्र/छात्रा का जन्मदिवस होता है, उस बच्चे को हम प्रार्थना सभा में बुला कर उसे बताते हैं कि आज यह तारीख, माह व वर्ष है और आज आपका जन्मदिवस है। साथ ही ताली बजाकर चाकलेट बाँट कर जन्मदिवस मनाते हैं। इससे छात्र/छात्राओं में विद्यालय के प्रति लगाव बढ़ने लगा और उपस्थिति में भी सुधार होने लगा। 2.विज्ञान किट का उपयोग:- हमारे विद्यालय में विज्ञान किट एक बाक्स में रखे हुए थे, जिन्हें छात्र/छात्राएँ कभी-कभी देखते थे। हमने उस विज्ञान किट को पुस्तकालय में उन्हें एक स्थान पर प्रदर्शित करते हुए रखवा दिये, ताकि प्रतिदिन छात्र/छात्राएँ उन विज्ञान के उपकरणों को देखें और उनको जाने। इस तरह और भी सामग्री, जो विद्यालय में बच्चों के लिए सहायक शैक्षणिक सामग्री के बतौर आती है; उस सामग्री को बच्चों के लिए सुलभ हो, ऐसी जगह पर रख दिया जाता है। 3.पुस्तकों को प्रदर्शित करना :- विद्यालय में पुस्तकालय कक्ष में पुस्तकालय की पुस्तकें रेक में रखी होती थी। हमने उन पुस्तकों को दीवार पर कपड़े से पाकेट बनवाकर उसमें पुस्तकें रखी, जिससे कौन-सी पुस्तक है, वह प्रदर्शित होता और हर छात्र/छात्रा अपनी रुचि अनुसार पुस्तक को पढ़ कर पुनः पॉकेट में रख देते। इससे बच्चों की पढ़ने के प्रति रुचि जाग्रत हुई और वे स्वाध्याय को अपने जीवन में अपनाने लगे।

प्रस्तुतकर्ता
महेंद्र गोयल
ब्लॉक-निवाली, जिला-बड़वानी

शिक्षा मंदिर

शिक्षा मंदिर सबके लिए खोले जाते हैं
घर छोड़ स्कूल को बच्चे दौड़े आते हैं
पढ़ने की लगन शिक्षक रोज जगाते हैं
बच्चे पढ़-लिखकर शिक्षित बन जाते हैं
शिक्षा पाकर अपना भविष्य सँवारते हैं
बच्चे सबको अच्छे लगने लग जाते हैं
माता-पिता-गुरु सेवाकर स्वयं कमाते हैं
जीवन की नई परिभाषा लिखते जाते हैं
नवोदय क्रांति के भाव मन में जगाते हैं
'अटल' जीवन राह खुद जगमगाते हैं॥

अतुल मिश्र 'अटल'
नौलखा इन्दौर (म. प्र.)

खेल-खेल में..

प्राथमिक शिक्षा में वर्तमान में कई नये प्रयोग चल रहे हैं। इसमें कुछ प्रयोग शासन स्तर से लागू किए जाते हैं और कई प्रयोग शिक्षक स्वयं भी खोज कर अपनी शाला में उपयोग में लाते हैं। ये सारे प्रयोग शिक्षा में गुणवत्ता और सरकारी शाला के प्रति लोगों के रुझान हेतु किए जाते हैं। ऐसी ही एक प्रयोग धर्मी शिक्षिका हैं श्रीमती उज्ज्वला मेश्राम, जो कि एक प्राथमिक शिक्षक है और शासकीय प्राथमिक विद्यालय खैरटोला विकासखंड-लालबर्रा, जिला-बालाघाट , मध्यप्रदेश में पदस्थ है। इनके द्वारा बच्चों में शिक्षा और उनके ठहराव संबंधी कई नवाचार किए गए हैं :–

१) चित्र और अध्यापन - सामान्यतः छोटे बच्चों की ऐसी आदत रहती है कि वे सबसे पहले पाठ्य-पुस्तकों में चित्र देखते हैं और यदा-कदा इन चित्रों के माध्यम से वे स्थानीय खेल भी खेलते रहते हैं। बच्चों की इसी बात को ध्यान में रखते हुए इस शिक्षिका ने पुस्तक के चित्रों को कार्डबोर्ड पर बनाकर बच्चों के बीच ला दिए। इस तरह बच्चों को पाठ पढ़ाने में आसानी हुई और सरलता से समझाया भी जा सका।

२) कविता और कहानी - यह भी एक शिक्षण का प्रभावी ढंग है कि बच्चों को कहानी और कविता के माध्यम से कोई भी अवधारणा आसानी से सिखाई जा सकती है और इसी का प्रयोग किया गया, जिससे गुणवत्ता के साथ ही साथ शाला में उपस्थिति भी शत्-प्रतिशत रहने लगी।

३) खेल-खेल में अध्यापन - जब बच्चों के बीच बच्चे बन कर रहते हैं, तो वे और अधिक घुल-मिल जाते हैं और शिक्षक की हर बात को मानने लगते हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए इस विद्यालय में खेल-खेल में शिक्षा को प्रभावी ढंग से लागू किया गया और परिणाम उत्साहवर्धक प्राप्त हुए। बच्चों की विषय के प्रति रुचि जाग्रत हुई , अवधारणाओं को समझाने में सरलता अनुभव की गई और शाला में बच्चों का ठहराव होने लगा और इस तरह के कई नये-नये तरीके अपनाकर बच्चों को शाला के प्रति लगाव जाग्रत किया और उन्हें प्रकृति से जोड़ने का प्रयास भी किया गया। इन सारे प्रयासों से शाला में बच्चों के परीक्षा परिणाम में आशातीत सफलता मिली।

श्रीमती उज्ज्वला मेश्राम
प्राथमिक शिक्षक
विकासखंड-लालबर्रा,

श्री भुरसिंग खरते
प्रधानपाठक

श्री राधेश्याम मेहरा
प्राथमिक शिक्षक

श्रीमती आशा वर्मा
प्राथमिक शिक्षक

श्री मन्नालाल सोलंकी
प्राथमिक शिक्षक

समस्या है, तो समाधान भी है

हम बचपन से सुनते आए हैं कि समस्या है, तो उसका समाधान भी निश्चित ही है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि हम समाधान खोजने की ओर कदम बढ़ाते हैं या नहीं। वर्तमान समय में सरकारी विद्यालयों को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जैसे कि बच्चों की संख्या , बच्चों की उपस्थिति , अशासकीय विद्यालयों के सामने अपना अस्तित्त्व बनाए रखना आदि। कुछ इसी तरह की समस्याओं अपने दम पर हल निकाला बड़वानी जिले की शासकीय प्राथमिक विद्यालय रेहगुन (सिलावद) के शिक्षक साथियों ने। आइये सुनते हैं " समस्याएँऔर उनके हल " उन्हीं की जुबानी।स्टाफ/कर्मचारी के नाम:-1) श्री भुरसिंग खरते - प्रधानपाठक 2) श्री राधेश्याम मेहरा - प्राथमिक शिक्षक 3) श्रीमती आशा वर्मा - प्राथमिक शिक्षक 4) श्री मन्नालाल सोलंकी-प्राथमिक शिक्षक

नवाचार का नाम - पालक सम्पर्क -

1) समस्या:- हमारी विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति औसत से कम होने से चिंता का विषय बना हुआ था। जो हमारे स्टाफ के लिए समस्या का विषय बना हुआ था। इस समस्या के लिए हमने प्रयास किये, जिसमें हम सफल रहे।

2) समाधान:- हम सब स्टाफ द्वारा निरंतर पालक सम्पर्क करके पालकों को शिक्षा का महत्त्व बताकर पालकों को जाग्रत किया गया। पालकों को समझाया गया कि जब तुम्हारे बच्चें पढ़-लिख जायेंगे, तब वे अपना अधिकार समझ पायेंगे। इसलिए जीवन में सबसे बड़ा योगदान शिक्षा का होता है।

3) लाभ:- अनुपस्थित बच्चों के पालकों से संपर्क करने पर हमारे द्वारा शिक्षा का महत्त्व समझाने पर पालकों को बातें समझ में आ गई, जिससे उन्होंने अपने बच्चों को बकरी चराने, घर पर रहने, फालतू घूमने, छोटे बच्चों की रखवाली करने, मज़दूरी करने आदि को बंद करके शाला में भेजना सुनिश्चित किया।

नवाचार का नाम - कम्प्यूटर से शिक्षा

सबसे पहले यह बताना चाहूँगा कि हमारे स्टाफ द्वारा स्वयं के व्यय से कम्प्यूटर एवं प्रिंटर खरीदा गया। यही भावना अगर सभी शासकीय शिक्षकों में आ जाये, तो लगभग सभी शासकीय स्कूलों के हालात सुधर जायेंगे।

1) समस्या:- आज का युग कम्प्यूटर का युग है। शिक्षा के क्षेत्र में हमारा देश बहुत आगे निकल गया है, किन्तु कहीं-कहीं आज भी ऐसे क्षेत्र है ; जहाँ शिक्षा का प्रतिशत 50 से 60 प्रतिशत है। हम मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले में रहते है ; जो कि आदिवासी बाहुल्य जिला है। विशेषकर सेंधवा, पाटी, पानसेमल, निवाली आदि विकासखण्ड आते है, जहाँ अधिकतर पालक मज़दूरी हेतु अन्य प्रदेश में पलायन कर जाते हैं।

2) समाधान:- कुछ काम ऐसे होते है, जो शिक्षकों को स्वयं अपने व्यय पर करने होते है, इसलिए हमारे स्टाफ द्वारा कम्प्यूटर खरीदा गया। कम्प्यूटर स्कूल में आने से एक अलग ही माहौल बन गया। सबसे पहले बच्चों को कम्प्यूटर से अवगत कराया गया। उसके बाद राज्य शिक्षा केन्द्र से शिक्षा संबंधित सी.डी., पी.डी.एफ. अन्य संशाधन, जिससे शिक्षा लेकर बच्चें प्रभावित हुए। बच्चे भी कम्प्यूटर शिक्षण में रुचि लेने लगे। इससे स्कूल का माहौल सौहार्द्रपूर्ण हो गया। है।

3) लाभ:- कम्प्यूटर विद्यालय में आने से कम्प्यूटर की जानकारी व कम्प्यूटर से होने वाले फायदे आदि को समझने लगे हैं, जिससे आज की शिक्षा उनको समझने में आसानी हो गई।

विशेष:- 1) इस प्रकार के प्रयासों से शाला से पहली बार छात्रा कु. मोनिका डोडवे का चयन विशेष विद्यालय निवाली हेतु चयन हुआ है, जो स्टाफ के लिए हर्ष का विषय रहा। 2) शाला स्टाफ द्वारा प्रति तीन माह में बच्चों को रुचिकर भोजन स्वयं के व्यय से कराया जाता है, जिसमें ग्राम पटेल, सरपंच, वरिष्ठ नागरिक व पालक शिक्षक संघ के अध्यक्ष, सदस्यों आदि को सम्मिलित किया जाता है।

नवाचार का नाम - माईक सेट

1) समस्या :- हमारी विद्यालय में बच्चे बोलने में हिचकिचाते थे, तब हम सब स्टाफ वालों ने मंथन किया कि अब इस समस्या का समाधान कैसे किया जाए ? तब हमारे द्वारा स्वयं के व्यय से एक माईक सेट खरीदा गया।

2) समाधान:- माईक सेट आने के बाद, जो बच्चे कभी नहीं बोलते थे ; वे माईक देखकर बहुत ही उत्साहित हुए और धीरे-धीरे सभी बच्चे प्रतिदिन प्रार्थना, सुविचार, प्रेरणा गीत, बालसभा आदि माईक पर बोलने लगे। शाला में जो बच्चे अनुपस्थित रहते थे, वे भी माईक सेट की आवाज़ सुनकर प्रतिदिन विद्यालय आने लगे।

3) लाभ:- माईक सेट लाने से यह फायदा हुआ कि बच्चे बोलने, गाने आदि गतिविधि में बढ़-चढ़कर भाग लेने लगे।

साक्षात्कार

शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन काल से ही देखा गया है कि जितने अनुभवी गुरु होते थे, उतने अनुभवों पर आधारित उनके शैक्षिक प्रयोग होते थे। आज भी शिक्षा के क्षेत्र में जितने अनुभवी शिक्षक- शिक्षिका हैं, उतने लंबे अनुभव के आधार पर वे शिक्षा के क्षेत्र में कठिन अवधारणाओं को सरलतम शब्दों में समझाने के लिए नित्-नव-नवाचार की खोज कर उसे विद्यालय में बच्चों को दक्ष बनाने में अपनाते हैं और उसमें शत्-प्रतिशत परिणाम लाते हैं। शिक्षकों का यही जज्बा उन्हें राष्ट्र निर्माता जैसी उपमा से नवाज़े जाने का कारण रहा है। ऐसी ही एक शिक्षिका है सुषमा शुक्ला, जो कि शासकीय बाल मंदिर क्रमांक 3 मंजुला आश्रम इंदौर में सहायक शिक्षिका के रूप में पदस्थ हैं। विगत 38 वर्षों के कार्यकाल में इन्होंने समय के अनुसार कई नवाचारों का अपने विद्यालय में प्रयोग किया है और सफल परिणाम भी प्राप्त किए हैं।आज अवसर आया है कि नवोदय क्रांति की ई-पत्रिका में इनके एक संख्या दक्षता संबंधी नवाचार को प्रकाशित करने का।

नवाचार - सर्वप्रथम इन्होंने बताया कि इस नवाचार के उपयोग से बच्चे 10 की संख्या किन-किन दो अंकों से मिलकर बन सकती हैं। अर्थात् परम मित्र के बारे में अच्छी तरह से समझ जाते हैं। इस नवाचार में हम फर्श पर दस की संख्या लिखते हैं और उसी के नीचे दो पंक्तियाँ खींच कर दो गोले बनाते हैं। तदुपरांत सहायक सामग्री कंकर या अन्य कुछ उन दो गोलों में दस बनाने वाले दो अंकों की मात्रा में रख देते हैं, फिर एक बच्चे को बुला कर उन ढेरियों को गिनवा कर अंक वहीं लिखवाया जाता है। इस तरह बच्चें आसानी से खेल-खेल में सीखते चले जाते हैं। यह शून्य निवेश नवाचार है, इसमें कोई भी सहायक सामग्री बाजार से खरीदना नहीं पड़ती। नवोदय क्रांति की 'ई पत्रिका' के बारे में चर्चा करने पर सुषमा जी ने कहा कि यह बहुत खुशी की बात है कि मध्यप्रदेश नवोदय क्रांति परिवार 'ई-पत्रिका' प्रकाशित कर रहा है, जिससे हमें एक-दूसरे के नवाचारों का अध्ययन करने में मदद मिलेगी और शिक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रांति आएगी। मैं नवोदय क्रांति परिवार मध्यप्रदेश को इस अनुपम कार्य हेतु साधुवाद ज्ञापित करती हूँ

सुषमा शुक्ला
सहायक शिक्षिका

डॉ. रजनी पांडेय
इंदौर
संकलन

मस्ती की पाठशाला

बच्चों को खूब पढ़ाऊँगा, उन्हें सदैव आगे बढ़ाऊँगा।
खुशी से शाला आए सब बच्चे, ऐसा माहौल मैं बनाऊँगा।
खेलें-कूदें और पढ़ें बढ़ें, शाला में वे पूरा दिन रहें।
गतिविधियाँ करवाकर सदा, हर बात उन्हें समझाऊँगा।
हर मूलभूत दक्षता उनकी, हर हाल में पूरी करवाऊँगा।
टी.एल.एम. है आधार मेरा, टी. एल.एम. खूब बनाऊँगा।
बच्चों को खूब पढ़ाऊँगा, उन्हें सदा आगे बढ़ाऊँगा।

रचनाकार
देवीलाल मालेचा
प्राथमिक शिक्षक
जिला-मंदसौर (मध्यप्रदेश)

संशाधन और शिक्षक

शिक्षण में जहाँ एक ओर छात्र और शिक्षक दो जैविक घटक की मूलभूत आवश्यकता है, वहीं एक ओर अजैविक घटक सहायक शिक्षण सामग्री के महत्त्वपूर्ण योगदान को भी नकारा नहीं जा सकता। प्रभावी शिक्षण में सहायक शिक्षण सामग्री एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है और यह कठिन अवधारणाओं को भी सरल कर देती है। सहायक शिक्षण सामग्री के साथ ही साथ यदि शाला में आवश्यक संशाधन जैसे बैठक व्यवस्था , पेयजल , पुस्तकालय, बिजली, पंखे, कम्प्यूटर आदि की भी व्यवस्था हो, तो सोने पे सुहागा हो जाता है। चलिए आज हम बात करते हैं सहायक शिक्षक योधराज पटेल सर की, जो कि सन् 1982 से शैक्षणिक कर्म कर रहे हैं और अपने 38 वर्षीय कार्यकाल में इन्होंने इन्हीं सब बातों पर गौर करते हुए अपनी शाला शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय पिपल्दा विकास खंड और जिला इंदौर को समस्त मूलभूत संशाधनों से युक्त कर दिया। आज इस विद्यालय में छात्राओं के माध्यमिक विद्यालय पिपल्दा विकास खंड और जिला इंदौर को समस्त मूलभूत संशाधनों से युक्त कर दिया। आज इस विद्यालय में छात्राओं के बैठक के लिए पर्याप्त मात्रा में फर्नीचर उपलब्ध है। छात्राओं को अध्ययन कक्ष में प्रकाश और हवा की माकूल व्यवस्था है। इस हेतु कक्षों में पंखे लगवा दिए गए हैं। वहीं आज के इस वैज्ञानिक युग में जब टीवी पर स्मार्ट कक्ष और कम्प्यूटर शिक्षण के समाचार सुन इनके मन में भी यह बात घर कर गई और आज यह विद्यालय भी स्मार्ट कक्ष युक्त हो, आधुनिक शिक्षण करवाने लगा है। इसी तरह शाला परिसर आकर्षक हो। इसके लिए छायादार वृक्ष लगाये गए, जिन्हें देखकर मन प्रफुल्लित हो जाता है। कहते हैं कि जब मनुष्य में कुछ करने की लगन हो, तो रास्ते खुल जाते हैं। इसी बात को ध्यान में रख कर ये समस्त संशाधन श्री पटेल ने जनसहयोग और विद्यालय स्टाफ के सहयोग से सम्पन्न किए। इन सारे संशाधनों का लाभ यहाँ पर दर्ज़ लगभग 80 छात्राओं को मिल रहा है और वर्तमान में इस शाला को एक एनजीओ ने गोद ले लिया है, जो कि अन्य सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करेंगे। जब इनसे नवोदय क्रांति परिवार मध्यप्रदेश की ई पत्रिका के बारे में चर्चा की गई, तो अत्यंत प्रसन्न होकर श्री पटेल ने कहा कि नवोदय क्रांति परिवार मध्यप्रदेश के इस कदम से मध्यप्रदेश के शिक्षकों के नवाचार पूरे भारत में और विदेशों में भी पढ़े जा सकेंगे और अन्य शिक्षकों का भी उत्साह बढ़ेगा, कुछ और नया अन्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

श्री योधराज पटेल
विकास खंड-पिपल्दा
जिला-इंदौर

चित्रकथाओं के माध्यम से शिक्षण

प्राचीन काल में भारतीय शिक्षा पद्धति कथा-कहानी आधारित थी। तत्कालीन गुरु पेड़ों के नीचे बैठकर अपने शिष्यों को कथाओं और कहानियों के माध्यम से शिक्षा प्रदान करते थे और यह शिक्षा चिरस्थाई हो शिष्यों के मस्तिष्क पटल पर अंकित हो जाती थी। इसी बात को ध्यान में रखकर वर्तमान में भी चित्र और कहानियों को पाठ्यक्रम में यथोचित स्थान दिया गया है। यही बात शासकीय उत्कृष्ट प्राथमिक विद्यालय निसरपुर विकासखंड पानसेमल जिला बड़वानी के शिक्षकों ने भी अपनाई और आशातीत सफलता प्राप्त की।यहाँ पदस्थ शिक्षिका रश्मि शुक्ला ने बताया कि प्राथमिक शाला निसरपुर में पदस्थ शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा शाला को सर्व सुविधा युक्त और संशाधनों के माध्यम से मनोरम बनाया। इस शाला में 241 विद्यार्थी दर्ज़ हैं, जो कि सदैव नवाचार के माध्यम से शैक्षणिक कार्य करने में अग्रसर रहते हैं। **नवाचार की पृष्ठभूमि :-** अक्सर माता-पिता कुछ बातों से चिंतित रहते हैं कि उनके बच्चों का पढ़ाई में मन नहीं लगता शिक्षक भी बहुत मेहनत से पढ़ाते हैं, लेकिन छात्र उसे आत्मसात् नहीं कर पाते; यह समस्या बहुत सामान्य है। यदि छात्रों को कठिन पाठ भी कहानी- किस्सों और चित्रों के माध्यम से पढ़ाया जाए, तो छात्र को भी पढ़ने और सिखने में आनंद की अनुभूति होने लगती है। आप स्वयं भी अपने बचपन को याद कीजिए, आपको कहानी कितनी भाती थी। बहुत सी कथाएँ और पात्र आपको आज भी याद होंगे चित्र कथा के माध्यम से पठन-पाठन एक सशक्त नवाचार , जिसे यदि हर विद्यालय अपना ले, तो छात्रों को पाठ्यक्रम सरल व रोचक लगेगा और विभिन्न विषयों के पाठ उनके मस्तिष्क में अंकित हो जाते हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए हमने विद्यार्थियों को कहानी और स्थानीय प्रचलित किस्सों के माध्यम से पढ़ाना आरंभ किया। इन कहानियों के पात्रों के चित्र भी अलग से बनाए गए। इस नवाचार से एक ओर तो विद्यार्थियों का शिक्षकों का जुड़ाव हुआ, वहीं दूसरी ओर शिक्षकों का समुदाय से जुड़ाव हुआ; क्योंकि शिक्षक स्थानीय किस्सों के लिए समुदाय के लोगों से संपर्क करने लगे। उनकी स्थानीय बोली में भी बात कर उन्हें अपनी और शाला की ओर आकर्षित करने लगे। इस तरह समुदाय की सहभागिता पूर्ण रूप से प्राप्त होने लगी।

नवाचार के लाभ- १- छात्रों में रचनात्मकता का विकास २- सीखने के परिणाम में सुधार या कक्षा अनुकूल सीखने के स्तर में सुधार ३- विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए समावेशी शिक्षा का सृजन ४- बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास ५- समुदाय से सहभागिता ६- सृजन की ओर बच्चों का रुझान ७- पालकों का सरकारी शिक्षा के प्रति आकर्षण ८- विद्यार्थियों का बेहतर परीक्षा परिणाम ९- शिक्षकों में सृजनशीलता का भाव १०- शाला में संशाधनों की उपलब्धता में समुदाय की भागीदारी ११- दर्ज संख्या में बढ़ोतरी

शाला में पदस्थ शिक्षक-शिक्षिका १- श्री सेवकराम नरगावे २- श्रीमती रश्मि शुक्ला ३- श्रीमती शीतल भिलावे ४- श्रीमती भारती चौहान (५- श्रीमती अनिता वास्कले

प्रयोगधर्मी शिक्षक

एक सफल विद्यालय के आँकलन हेतु उस विद्यालय के विद्यार्थियों का आँकलन किया जाता है। यदि विद्यार्थी कार्यानुसार दक्षता रखते हैं, तो वह विद्यालय और शिक्षक सफल माने जाते हैं। विद्यार्थियों को दक्ष करने हेतु सर्वप्रथम आवश्यकता है, विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति और इसके लिए शिक्षक तरह-तरह के प्रयोग करते रहते हैं। एक ऐसे ही विद्यालय के बारे में जानिए, जिसने बाल केबिनेट की तर्ज पर पालक केबिनेट का गठन कर शैक्षिक गुणवत्ता और उपस्थिति बढ़ाने में सफलता पाई। विद्यालय का नाम :- शासकीय कन्या आश्रम बोकराटा संकुल केंद्र :-शा उ मा वि. बोकराटा तहसील - पाटी जिला - बड़वानी (मध्यप्रदेश) विद्यालय में शिक्षकों की संख्या :- 02 - शिक्षकों का नाम :- श्रीमती सूरज राठौर व श्रीमती सपना मालवीया। **नवाचार का नाम :-** बाल कैबिनेट की तर्ज़ पर पालक केबिनेट का गठन करना **नवाचार गतिविधि :-** हमने बाल कैबिनेट की तर्ज पर शाला में 50 बालकों की सहमति से पालक केबिनेट का गठन किया, जिसमें प्रधानमंत्री , शिक्षा मंत्री, जल मंत्री आदि 10 प्रकार के मंत्रियों का चयन किया गया, जिसमें सभी पालक केबिनेट के सदस्य माह की 30 तारीख को उपस्थित होते हैं, ये सभी सदस्य शिक्षकों का सहयोग करते हुए बालकों को समझाइश देते हैं और प्रत्येक छात्रा के शिक्षा स्तर और दक्षता की जानकारी लेते हैं। शाला के विकास में तथा समस्याओं के समाधान में पूर्ण सहयोग देते हैं।

नवाचार के लाभ :- 1 - छात्राओं की 100% उपस्थिति होना। 2 - छात्राओं का शिक्षा स्तर बढ़ा। 3 - बच्चों में शिक्षा ,स्वच्छता ,पर्यावरण के प्रति जागरूकता का बढ़ना। 4 - पालकों में भी शिक्षा के प्रति जागरूकता व सहयोग की भावना बढ़ी। 5. समय-समय पर शाला के विभिन्न कार्य जैसे (गृहकार्य , पालक बैठक , सांस्कृतिक कार्य आदि) में सहयोग मिलना। 6 - नियमित उपस्थिति से विद्यार्थियों में कक्षानुरूप दक्षताओं का विकास। 7 - शासन की विभिन्न योजनाओं का समय पर और यथावत् क्रियान्वयन। 8 - शैक्षणिक दक्षताओं के साथ ही साथ सह-शैक्षिक दक्षताओं का भी समुचित विकास। 9 - पालकों और ग्रामवासियों में जन सहयोग की भावना का पनपना। 10 - शिक्षकों में आत्मसंतुष्टि की भावना का उदय।

****

उन्नत शिक्षक-उन्नत राष्ट्र

हम जागरूक बनें और नौनिहालों को भी बनायें।
हम शिक्षक राष्ट्र निर्माता राष्ट्र को प्रगति पथ पर ले जायें।।
देश का हर एक नागरिक होगा यदि स्वस्थ।
तो विकास की हर राह हो जाएगी स्वमेव प्रशस्त।।
थल-जल और नभ भी जब प्रदूषण से हो जाय मुक्त।
अन्न-जल और सब मे वे उपजेंगे रोग से मुक्त।।
भयमुक्त सब बच्चे हों और शिक्षित--संस्कारी।
हम सब शिक्षकों पर यह जिम्मेदारी है भारी।।

रचनाकार
डॉ. रजनी पांडेय
शा.प्रा.वि. व्यासनगर - इंदौर -१

बाल कविता

मुर्गा बोला कुकड़ूँ कूँ,बच्चों अब तक सोये क्यूँ
जो जल्दी उठ जाते हैं, जग में नाम कमाते हैं
अब जल्दी उठ जाओ तुम, थोड़ा घूम के आओ तुम
योगासन व्यायाम करो, रोग का काम तमाम करो
दूध और फल खाओ तुम, सेहत खूब बनाओ तुम
मीठी वाणी बोलो तुम, सबके प्यारे हो लो तुम
सदा बड़ों का रक्खो मान, छोटों को भी दो सम्मान
पढ़ लिखकर तुम बनो महान्, देश की खातिर दे दो जान ।।

रचनाकार---प्रेमलता पंथी प्राथमिक
शिक्षक
बेगमगंज, जिला रायसेन (म.प्र.)

****

(भोजन के तत्त्व)

आओ भोजन का हम महत्त्व जानते हैं
क्या-क्या होते इसमें वे तत्त्व जानते हैं
कार्बोहाइड्रेट इसमें, जो शक्तिमान होता है
गेहूँ-मक्का-शक्कर में ,भरपूर होता है
ऊर्जा देने वाला यह , तत्त्व मानते हैं
आओ भोजन.....!
छोटी-सी काया को, जो विकसित करता है
दूध-दाल-सोया में, जो खूब मिलता है
प्रोटीन यह कहलाता ,प्रमुख तत्त्व मानते हैं
आओ भोजन.....!
वसा बसा घी-तेल में, तुम रोज खाते रहना
फल-सब्जियाँ हमेशा ही, भोजन में लेते रहना
खनिज विटामिन के,जो सत्व चाहते हैं
आओ भोजन.....!

विजय शर्मा
ग्राम--खलघाट
जिला-धार(म. प्र.)

****

हम शिक्षक हैं

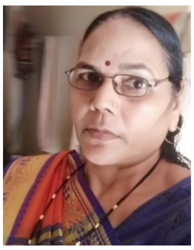

हम शिक्षक हैं शिक्षा अलख जगायेंगे
ज्ञान पुष्प की सुगंध हम घर-घर फैलायेंगे
कर शिक्षा का महादान कर न कहीं फैलायेंगे
जीवन की सीखों से बच्चों को सजायेंगे
उनको संस्कारी बना गीत प्रेम के गायेंगे
राष्ट्र निर्माता शिक्षक नव निर्माण कर जायेंगे।

रचनाकार -
मनोरमा नागर
मक्सी, जिला-शाजापुर
मध्यप्रदेश

काम छोटा-परिणाम बड़ा

वैसे देखा जाए, तो कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता; लेकिन फिर भी यदि परिभाषित किया जाए, तो जिस काम में मेहनत कम लगती हैं; उसे छोटा काम कहा जा सकता है। ऐसे ही छोटे-छोटे काम कर हमारे शिक्षक साथी बेहतर परिणाम प्राप्त करने में माहिर हैं और इस तरह वे छोटे काम को भी अपने आप में बड़ा बना देते हैं।

चलिए, अब मैं आपको ले चलता हूँ बड़वानी जिले के पाटी विकास खंड की शासकीय प्राथमिक शाला ठान में, जहाँ की शिक्षिका श्रीमती कविता चाँदौरे मेडम ने छोटे-छोटे कामों से बेहतर परिणाम प्राप्त किए हैं। **नवाचार का नाम-** पोस्टर पढ़ो-आगे बढ़ो गतिविधि

इस गतिविधि में विषय से संबंधित पोस्टर बना कर दीवार पर लगा दिये जाते हैं। इन पोस्टरों में जिस दिन जो पढ़ाया गया है, वही लिखा होता है, ताकि बच्चे खाली समय में पढ़ते रहें और पुनरावृत्ति होती रहे। इस गतिविधि में बच्चा पहले पोस्टर को पढ़कर , समझ कर, सीख कर ही अगले पोस्टर पर पहुँच पाता है, जिससे बच्चे आगे बढ़ने में रुचि लेते हैं।

सहायक सामग्री- कागज और पेन

उद्देश्य -

1-पोस्टर पढ़ो-आगे बढ़ो विधि से बच्चों में विषय के प्रति रुचि जागृत करना 2-भाषा की समझ के साथ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना 3-पोस्टर के माध्यम से विषयवस्तु की तैयारी करवाना और बच्चों की झिझक दूर करना 4- बच्चों को भी चित्रकला की ओर प्रेरित करना **क्रियान्वयन -** पोस्टर पढ़ो-आगे बढ़ो गतिविधि का उपयोग हम कक्षा में प्रतिदिन कर सकते हैं। जिस दिन जो विषय वस्तु पढ़ाई उसका पोस्टर बना कर प्रतिदिन या हर तीसरे दिन दीवार पर लगा दिया जाता है व बच्चों को पढ़ने के लिए कहा जाता है। बच्चों को एक पोस्टर पूर्ण करने के बाद ही दूसरे पोस्टर तक पहुँचना होता है, जिसे बच्चे रुचि के साथ पढ़ते हैं और आगे बढ़ने को उत्सुक होते हैं। साथ ही बच्चों की विषय और भाषा के प्रति समझ बढ़ती है और पुनरावृत्ति भी होती रहती है। ऐसे हम प्रत्येक विषय के पोस्टर बना कर अलग अलग कोने में लगा सकते हैं।

उदहारण के तौर पर हमने कक्षा में बच्चों को हिन्दी विषय में वर्ण और मात्राएँ पढ़ाई उसी वर्ण और मात्रा से बनने वाले शब्द, वर्ण और मात्राओं को कागज पर लिख कर दीवार पर चिपका दिया जाता, जिसे बच्चे पढ़ कर जल्दी समझ लेते हैं कि आज उन्हें शिक्षक द्वारा जो पढाया गया है, वही वह पोस्टर पर देखते हैं और पढ़ने की, समझने की कोशिश करते हैं। इस गतिविधि से बच्चों को अभ्यास कार्य में मदद मिलती है और विषय के प्रति आकर्षण भी बढ़ता है।

प्रस्तुतकर्ता - श्रीमती कविता चांदौरे
शिक्षक
पाटी (जिला-बड़वानी)

चंदा मामा

चंदा रे चंदा तू दिखता कैसा, मम्मी की गोल-गोल रोटी जैसा
पापा की गोल-गोल थाली जैसा, चंदा रे चंदा तू दिखता कैसा
दीदी के गोल-गोल कंगन जैसा, भैया की गोल-गोल गेंद जैसा
चंदा रे चंदा तू दिखता कैसा, दादा के गोल-गोल चश्मे जैसा
दादी की गोल-गोल बिन्दी जैसा, चंदा रे चंदा तू दिखता कैसा
मामा के गोल-गोल छल्ले जैसा, मामी की गोल-गोल बाली जैसा
चंदा रे चंदा तू दिखता कैसा, चाचा के साइकिल के पहिए जैसा
चाची की गोल-गोल चूड़ियों जैसा, चंदा रे चंदा तू गोल-गोल वृत्त जैसा

शिक्षिका का नाम - ममता बनाईत
प्राथमिक शिक्षक
मुलताई
जिला - बैतूल

मैजिक ट्री

मैजिक ट्री नामक सहायक शिक्षण सामग्री का उपयोग कक्षा 1 व 2 के सभी विषय से संबंधित अवधारणाओं को समझाने के लिए किया जाता है। इस पर अक्षर , शब्द व छोटे वाक्य बनाए जा सकते हैं और इसी प्रकार अंग्रेजी के भी लेटर वर्ड और सेंटेंस बनाकर सिखाया जा सकता है इसमें अंकों का ज्ञान कराने के लिए संख्या पट्टी लगाई गई है।

बच्चे इसमें छोटे अंको को जोड़ने व घटाने के लिए भी प्रयोग करते हैं। यह दोनों ही ओर से उपयोग किया जाता है और इसका निर्माण वेस्ट मटेरियल जैसे फ्रिज के साथ आई थर्माकोल शीट का उपयोग किया गया है। इसके ऊपर बनाए गए फूल , पक्षी आमंत्रण कार्ड से बनाए गए हैं। इस ' मैजिक ट्री ' को देखकर बच्चें आकर्षित होते हैं और आनंद से सीखते हैं।

सीड ट्री

इस गतिविधि में हम बच्चों को बीजों के द्वारा पेड़ बनाना सिखायेंगे। जिसे हम ' सीड ट्री ' कह सकते हैं। आज मैं आपको सूखे धनिए के द्वारा पेड़ बनाना सिखाऊँगी।

सामग्री- कार्ड शीट 12×12"फेवीकोल, हरा वाटर कलर वैवाहिक पत्रिका के लाल रंग के पुराने कार्ड और रंगीन टेप।

बनाने का तरीका- कार्डशीट के चारों तरफ रंगीन टेप लगा दें। स्केच पेन से पेड़ की आकृति बना लें। पूरे पेड़ पर अच्छी तरह से फेविकोल लगा दें। वृक्ष के ऊपरी हिस्से में साबूत गोल-गोल सूखे धनिए चिपका दें। वृक्ष के तने व डालियों को काले स्केच पेन से रंग दें। बीजों को अच्छी तरह से हथेली से दबा दें, जिससे वे अच्छी तरह से चिपक जाए। सूखने पर धनिए वाले स्थान पर हरे कलर का छिड़काव कर दें। लाल रंग के कार्ड को बटन के आकार के गोल-गोल काट कर फल जैसे चिपका दें।

इसे बच्चे अपनी कक्षा में व अपने कमरे में लगा सकते हैं और साड़ियों के डिब्बे में अंदर की तरफ चिपका कर सुरक्षित रख सकते हैं कक्षा एक से तीन तक के छात्र इसे बड़ी आसानी से बना सकते हैं। इस गतिविधि से बच्चों में सृजनशीलता का भाव आएगा।

श्रीमती प्रकाशदेवी विश्वकर्मा
सहायक शिक्षिका
वि ख बड़वारा

भावातीत ध्यान

यदि कलश स्थिर हो जाए तो स्थिर हो जाता है जल
यदि शरीर स्थिर हो जाए तो स्थिर हो जाता है मन
थोड़ा वक्त लगा करता है,
जल को स्थिर होने में थोड़ा वक्त लगा करता है
मन को स्थिर होने में, जल स्थिर हो जाने पर वह हो जाता है
अतीत मन स्थिर हो जाने पर वह हो जाता है - भावातीत
पुनः पूर्व स्थिति में आने पर स्व का न होता हो भान
समझ लो उसने किया है ठीक से भावातीत ध्यान ठीक से
भावातीत ध्यान।

रचनाकार -
श्रीमती तृप्ति चौबे
माध्यमिक शिक्षक शास.उत्कृष्ट
विद्यालय देवास, मध्यप्रदेश

अ से अनार

अ से होता है अनार
आ से बनता है आकार
इ से इत्र इधर तो लाना
ई ईख से शकर बनाना
उ से उल्लू रात को जागे
ऊ से ऊँट तो सरपट भागे
ऋ से ऋग्वेद ज्ञान बढ़ाए
ऋ से ऋषि ध्यान लगाये
ए से एक गिनती करना
ऐ से ऐनक कान पर रखना
ओ से ओस की बूँदे आये
औ से औरत घर बसाये

रचनाकार- गणेश सोनी
राजपुर
जिला बड़वानी

बच्चों के ठाठ

कोई है शरारती कोई भोले-भाले हैं, मेरे बच्चों के तो ठाठ ही निराले हैं।
कितने प्यारे मेरे बच्चे देश की शान है, बच्चे सबकी जान है
बच्चे शाला में पढ़ते तो लगे मतवाले हैं, मेरे बच्चों के तो ठाठ ही निराले हैं।
मैंने बस चिन्तन किया है, नवाचार प्रतिदिन किया है
बाल कैबिनेट गठन करवाया, बच्चों से संचालित करवाया
कर्मशील खोले किस्मत के ताले हैं, मेरे बच्चों के तो ठाठ ही निराले हैं।
प्रार्थना भी करवाते बच्चे स्वच्छता पाठ पढ़ाते बच्चे
नित् नव खबरें सुनाते बच्चे, हँसते खिल-खिलाते बच्चे
नवाचार करते देखे कहीं अटाले हैं, मेरे बच्चों के तो ठाठ ही निराले हैं।
किसी से भी कम ये नहीं, किसी बात का गम नहीं
कोई स्तुति या निंदा नहीं, इन्हें कोई भी चिंता नहीं
मुश्किल को भी आसानी में ढाले हैं, मेरे बच्चों के तो ठाठ ही निराले हैं।
हमने फर्नीचर बनवाया, बच्चों के मन को भाया
स्वेटर वितरण करवाया, फिर बालमन हरषाया
हर कोई कचरा डस्टबिन में डाले हैं, मेरे बच्चों के तो ठाठ ही निराले हैं।
स्कूल में सारी सुविधा पाते, इसलिए घर रुक नहीं पाते
माँ कहे मामा के घर चलते पर, बच्चे शाला में आ जाते
शिक्षक की बातों को ये न टाले हैं, मेरे बच्चों के तो ठाठ ही निराले हैं।
कोरोना जब से है आया, आफत ये भारी है लाया
स्कूलों को बन्द करवाया, पर पढ़ाई न रुकवा पाया
हमने घर जा कर पढ़ाया, मोहल्ला क्लास में बुलाया
और रेडियो भी सुनवाया, डीजिलेप कार्यक्रम आया
मास्क वितरण करवाया, सुरक्षा का कदम बढ़ाया
खुशियों के दिन पुनः आने वाले हैं, मेरे तो बच्चों के ठाठ ही निराले हैं।

श्रीमती प्रीति उपाध्याय
विकासखंड- कालापीपल
जिला-शाजापुर (म.प्र.)

इमोजी कार्ड बोर्ड

उद्देश्य -
किशोरावस्था में बच्चों की अनुभूति और संवेदनाओं का पता करना
प्रयोग में आने वाली वस्तुएँ- पुराना हार्ड बोर्ड, कलर पेंसिल, फेविकोल, विभिन्न प्रकार के रंगविधि --पुराने हार्डबोर्ड को गोल आकार में काट लें, फिर उसमें इमोजी के ड्राइंग बनाये विभिन्न अनुभूतियों के अनुसार। इसके बाद उसे रंगों से आकर्षक बनाये।
उपयोग - (1) बच्चों के मूड को पहचानने हेतु। (2) अपने विषय कालखंड के पश्चात् विषय संबंध की जानकारी लेने के लिए इमोजी का उपयोग कर सकते हैं। (3) बच्चों को कालखंड कैसा लगा उसे वह इमोजी से बतलाते हैं और ऐसा करने में उन्हें बहुत आनंद मिलता है। (4) कम ख़र्च में बच्चों की भावनाओं और अनुभूतियों को पता करने का तरीका।

श्रीमती मनीषा सिंह
शास. पूर्व. माध्य. शाला
अमसेना, बिलासपुर

नहीं मानी कोरोना से हार, शिक्षक पहुँचे छात्र के द्वार

कोरोना ने संपूर्ण विश्व को आर्थिक, शारीरिक और शैक्षिक दृष्टि से बहुत पीछे कर दिया। इस महामारी से जहाँ एक ओर आर्थिक दृष्टि से बहुत पीछे हुए हैं, वहीं दूसरी ओर शैक्षिक स्थिति पर भी बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। देश के शिक्षा संस्थान महीनों से बंद पड़े हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षकों का दायित्त्व दोहरा हो गया है कि एक ओर स्वयं को इस महामारी से बचाना और बच्चों को शिक्षा से वंचित भी ना होने देना। ऐसी स्थिति का सामना करते हुए भी शिक्षकों ने हार नहीं मानी और वे छात्रों के द्वार पहुँच गए।

चलिए, अब हम सुनते हैं प्राथमिक शिक्षक भारत सिंह वाघ सर से उनकी शाला शा. प्रा. वि. मावली फलिया, दोंदवाड़ा वि. खण्ड पानसेमल, जिला-बड़वानी म.प्र. की कहानी। श्री भारत सिंह वाघ बताते हैं कि दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्र में मेरा विद्यालय स्थित होने के कारण ऑनलाइन पढ़ाई करवाना असंभव-सा था, क्योंकि एक ओर नेटवर्क समस्या, तो दूसरी ओर कुछ पालकों के पास एंड्रॉयड फोन की अनुपलब्धता। ऐसी स्थिति में भी हमने हार नहीं मानी और मैं और साथी शिक्षिका ज्योति ब्राह्मणे प्रतिदिन छात्रों के घर-घर जाकर उन्हें पढ़ाने लगे। हर दिन पाँच से दस पालकों और बच्चों से संपर्क किया। प्रतिदिन संपर्क से पालकों में भी पढ़ाई और शिक्षकों के समर्पण भाव के प्रति विश्वास जागा और वे भी भरपूर सहयोग करने लगे। इस प्रकार पालकों के सहयोग से हमारा काम आसान हो गया। हम बच्चों को, जो भी गृहकार्य देते; पालक उस गृहकार्य को बच्चों से नियमित करवाने लगे। इसी बीच हमने ग्राम की शिक्षित महिलाओं को चिह्नित कर उनसे संपर्क कर उन्हें भी बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूक किया। जिनके पास एंड्रॉयड फोन थे, उनके डीजीलेप समूह बना कर प्रतिदिन पाठ्य सामग्री भेजी जाने लगी और दूसरे दिन बच्चों से संपर्क कर उनका भी फीडबैक लेकर आगे की पढ़ाई का मार्गदर्शन करने लगे।

हमारे इस प्रयास से बच्चों की पढ़ाई के प्रति निरंतरता बनी रही और हमने विषम परिस्थितियों में भी धैर्य से काम लेकर समुदाय का सहयोग लिया। इन संपूर्ण गतिविधियों में श्री वाघ सर बताते हैं कि हमें विकास खंड शिक्षा अधिकारी पी. के. माथुर जी, बी.आर.सी.सी. संतोष पंवार जी, संकुल प्राचार्य रूपसिंह नरगावे जी और जनशिक्षक संजय राठौड़ तथा ममता शर्मा का रूम टू रीड के श्री अभिषेक चतुर्वेदी जी का भरपूर सहयोग मिला।

भारतसिंह वाघ
पानसेमल
जिला-बड़वानी

मैं एक शिक्षक हूँ

नहीं है परवाह मुझे अपनी जान की
रोज निकल जाता हूँ मैं घर से
विषय परिस्थितियों में भी मैं एक शिक्षक हूँ।
मुझे परवाह है बच्चों के भविष्य की
जाता हूँ मै बच्चों के घर शान से
उन्हें पढ़ाने आगे बढ़ाने, मैं एक शिक्षक हूँ।

मोहम्मद उमर शेख
ब्लॉक मल्हारगढ़
जिला-मंदसौर (मध्यप्रदेश)

विशेष बच्चे विशेष शिक्षण

वर्तमान में अभी तक हमने जितने भी नवाचार उपयोग में लिए हैं या जिनके बारे में पढ़ा है, वे सब सामान्य बच्चों के लिए है; किसी विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए नहीं थे। इसी बात का हमारे संपादक मंडल को चिंता थी कि कोई ऐसा नवाचार या शिक्षण पद्धति, जिससे विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को आगे बढ़ाया जा सके इस लेख को ई पत्रिका में स्थान दें। कहते हैं 'जहाँ चाह वहाँ राह' मिलती है। हमारी टीम के साथी मन्नालाल सोलंकी जी ने एक विशेष शिक्षक, जो कि सांकेतिक भाषा विशेषज्ञ है। श्री कृष्ण कुमार शर्मा जी से भेंट की और नवोदय क्रांति परिवार की 'ई-पत्रिका' के बारे में चर्चा की, तो श्री कृष्ण कुमार जी ने कहा कि मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि नवोदय क्रांति परिवार के द्वारा विभिन्न स्कूलों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सुनहरे भविष्य हेतु एक नवीन पहल की जा रही है, जिससे छात्र-छात्राओं को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से जोड़ कर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने की अनूठी पहल की जा रही है। इस पहल में हमारे विशेष आवश्यकता वालें दिव्यांग बच्चे भी मुख्य कड़ी हैं, जो समावेशी व्यवस्था के साथ शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। समावेशी शिक्षा की अवधारणा के अनुसार दिव्यांगता एक चिकित्सीय दोष की अवस्था नहीं है, जो किसी जादू से ठीक हो सकती है; बल्कि यह समाज की नकारात्मक व्यवहार, विभिन्न नीतियों और परंपराओं की उपज है। एक दिव्यांग बच्चा कक्षा में फेल नहीं होगा, यदि उसको उस ढंग से पढ़ाया जाए; जिससे वह आसानी से सीख सकता हो। हमारे दिव्यांग बच्चों को शैक्षणिक सामग्री के साथ-साथ सहायक उपकरण उनके शिक्षा के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होंगे। आज हमारे समाज में दिव्यांग बच्चों की शिक्षा को लेकर उनके अभिभावकों व शिक्षकों में जागरूकता की कमी अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों में देखने को मिलती है, जिसके कारण हमारे दिव्यांग बच्चे शिक्षा से आज भी वंचित हो रहे हैं एवं समाज की मुख्यधारा से पिछड़ रहे हैं। प्रायः देखने में आया है कि हमारे दिव्यांग बच्चों के साथ कई तरह की अप्रिय घटनाएँ विकृत मानसिकता के लोगों द्वारा की जा रही है। इस भावना एवं असमानता को दूर करने में हमारे नवोदय क्रांति की पहल प्रभावी कदम उठा सकती है।

इसके लिए हम सभी शिक्षकों को बच्चों के अनुकूल शिक्षण पद्धति का तकनीकी आधारित शिक्षण को बढ़ावा देना होगा तथा बच्चों में सतत् सुधार हेतु हम क्रियान्वयन के साथ-साथ निरंतर सीखने एवं नई खोज करने में प्रयासरत् रहें, जिससे हम अपने विशेष आवश्यकता वाले बच्चों हेतु गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित कर सके; जो विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के अधिगम को बेहतर बनाने में सहयोगी होगा।

नवोदय क्रांति परिवार की ' ई-पत्रिका ' की इस पहल को ढेर सारी शुभकामनाएँ एवं बधाई।

अंत में मेरा आप सभी से अनुरोध है कि मध्यप्रदेश में किसी दिव्यांग छात्र/छात्रा/व्यक्ति की दिव्यांगता से संबंधित कोई जानकारी लेने, साझा करने, समस्या व निदान हेतु आप संपर्क कर सकते हैं

कृष्ण कुमार शर्मा (विशेष शिक्षक)
एवं सांकेतिक भाषा विशेषज्ञ
व स्पीच थेरेपिस्ट, जिला शहडोल म. प्र.

बच्चों को जीवनोपयोगी वस्तु निर्माण के प्रोजेक्ट दें

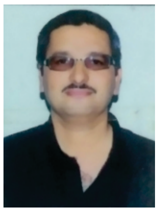

वर्तमान में शिक्षा क्षेत्र में प्रोजेक्ट वर्क का चलन बढ़ गया है। विभिन्न कक्षाओं के छोटे से लेकर बड़े छात्र अपने फ्री समय में कुछ-न-कुछ प्रोजेक्ट वर्क करते रहते हैं और यह कार्य यदि जीवनोपयोगी वस्तु के निर्माण की दिशा में हो, तो 'सोने पर सुहागा' हो जाता है। इसी विषय पर अब हम सुनते हैं उत्कृष्ट विद्यालय बड़वानी के शिक्षक अनिल मिश्र के विचार और उनकी नये निर्माण के बारे में।

मैं उत्कृष्ट विद्यालय बड़वानी का एक शिक्षक अनिल मिश्र हूँ। मैंने उत्कृष्ट विद्यालय में छात्रों को प्रोजेक्ट के रूप में सत्र 2019- 2020 में फिनाइल निर्माण करवाया, जिसका उपयोग विद्यालय तथा विद्यालय से जुड़े शासकीय छात्रावासों में किया गया। इस नए नवाचार से छात्रों की रसायन शास्त्र के प्रति रुचि भी बढ़ी। और उसकी उपयोगिता भी उन्हें समझ में आने लगी। साथ-ही-साथ विद्यालय और छात्रावास को बाजार भाव से लगभग आधे से भी कम दाम पर फिनाइल मिलने लगी। छात्रावासों से प्राप्त राशि से पुनः सामग्री बुलाकर छात्रों को मेरे द्वारा बार-बार अभ्यास करवाकर इस कार्य में पारंगत करने का प्रयास किया गया।

इससे हमें यह लाभ हुआ कि बच्चे रसायन प्रयोगशाला में बार-बार जाकर विभिन्न प्रयोगों और केमिकल से परिचित भी हुए। इसके अतिरिक्त मैंने टॉयलेट क्लीनर लगभग हार्पिक के समान ही तैयार किया, जो संस्था में उपयोग किया जा रहा है। मैं चाहता हूँ कि इस प्रयास को समस्त स्कूलों में प्रारंभ किया जाए, जिससे बच्चे विषय से जुड़े, व रसायन के महत्त्व को समझे। कोरोना काल को देखते हुए इस वर्ष, सत्र प्रारंभ होने पर हैंड वास तथा सैनिटाइजर का निर्माण भी संस्था में ही प्रारंभ किया जाएगा, जिसका कुछ मात्रा में निर्माण कर मेरे द्वारा प्रयोग किया जा चुका है।

इस विषय में जो शिक्षक साथी सीख कर ज्ञान को बच्चों तक पहुँचाने के इच्छुक हों, वे मुझसे सम्पर्क कर सकते हैं।

अनिल मिश्र
उ.मा.शिक्षक उत्कृष्ट विद्यालय
बड़वानी (म.प्र.)

अनिल मिश्रा सैनिटाइजर बनाते हुए

अनिल मिश्रा फिनाइल बनाते हुए

अनिल मिश्रा फिनाइल बनाते हुए

घर-घर सम्पर्क-- हर जन संपर्क

किसी भी विद्यालय का अस्तित्त्व उस विद्यालय में दर्ज बच्चे हैं। यदि किसी विद्यालय में बच्चे ही न हो, तो धीरे-धीरे उस विद्यालय का अस्तित्त्व समाप्त हो जाता है। जिस विद्यालय में बच्चे पर्याप्त हो, उनकी प्रतिदिन उपस्थिति भी बनी रहती है; तो उस शाला में शिक्षकों का आत्मबल भी बढ़ता है और वे पूरे मनोयोग से शिक्षण कार्य करवाते हैं इस तरह विद्यार्थियों की कक्षावार दक्षता और गुणवत्ता अपने चरम पर रहती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए इंदौर जिले के इंदौर ग्रामीण ब्लाक के संकुल शा. उ. मा. वि. रालामंडल के शासकीय माध्यमिक विद्यालय उमरीखेड़ा के शिक्षकों ने अपने स्तर से नवाचारी प्रयोग किये, तो आइये सुनते हैं, कुछ नवाचार उन्हीं की जुबानी। शासकीय शाला में उपस्थिति बढ़ाने हेतु किए गए प्रयास पर नवाचार --

नवाचार का नाम- "घर-घर सम्पर्क-- हर जन संपर्क"

सरकारी विद्यालयों में छात्र/छात्राओं की संख्या में पिछले कई वर्षों से लगातार गिरावट दर्ज की गई है।सरकार ने भी अपने स्तर पर कई बार सर्वे कर यह पाया कि वास्तव में शासकीय विद्यालयों में प्रवेश लेने वाले बच्चों की संख्या में कमी आई है, जबकि शासन द्वारा बच्चों के लिए बहुत-सी सुविधाएँ प्रदान की गई हैं, परंतु फिर भी पालक अपने बच्चों को अशासकीय विद्यालयों में प्रवेश दिलाने की ओर अग्रसर रहते हैं। इसी बात से चिंतित होकर शासकीय माध्यमिक विद्यालय उमरीखेड़ा के शिक्षकों ने शिक्षा सत्र 2019 - 2020 में अपने विद्यालय में छात्र-छात्राओं की संख्या को बढ़ाने हेतु एक नए विचार को अपनाया।

विद्यालय के शिक्षक श्री विनोद कुमार सोनगीर, श्री अमरीष शर्मा, श्रीमती मेघा तँवर ने अपने स्टाफ के अन्य शिक्षकों के साथ "घर-घर संपर्क-- हर जन संपर्क" अभियान चलाया। इसके अंतर्गत विद्यालय के शिक्षक /शिक्षिकाओं ने समूह बनाकर शासन से प्रदत्त समस्त सुविधाओं को पेम्प्लेट्स छपवाकर गाँव के घर-घर जाकर संपर्क कर शासन की योजनाओं, सुविधाओं और अपने अनुभवों को साझा कर शासकीय शालाओं में प्रवेश हेतु निवेदन किया।साथ ही शासन की योजनाओं और सुविधाओं के फ्लेक्स तैयार कर पूरे गाँव में जगह-जगह जाकर शिक्षक श्री विनोद कुमार सोनगीर, श्री अमरीष शर्मा, श्री लक्ष्मी नारायण धारीवाल और श्री राजेश कल्याने द्वारा लगाये गए।विद्यालय के शिक्षक / शिक्षिकाओं ने इस नवाचारी प्रयोग से अपने विद्यालय की श्रेष्ठ सुविधाओं का जमकर प्रचार-प्रसार किया।

जिसका लाभ यह हुआ कि पालकों के मन में यह विश्वास जागा कि वास्तव में हम हमारे बच्चों को शासकीय विद्यालय में प्रवेश दिलाएँ, जहाँ पर प्रशिक्षित और अनुभवी शिक्षक है और जहाँ शिक्षण के मूलभूत संशाधन उपलब्ध है। शाला परिवार के इस "घर-घर संपर्क - हर घर संपर्क" अभियान से शाला में प्रवेश 2018 की तुलना में दुगुनी वृद्धि हुई। जहाँ वर्ष 2018 में कक्षा 1 ली में 17 बच्चो ने प्रवेश लिया था, वहीं 2019 के सत्र में 35 बच्चों का प्रवेश हुआ। साथ ही अन्य कक्षाओं में भी छात्र/ छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई। शासकीय माध्यमिक विद्यालय उमरीखेड़ा के इस प्रयास और नवाचार को उच्च अधिकारियों ने भी सराहना की। साथ ही समाचार पत्रों के माध्यम से भी इसका प्रचार-प्रसार हुआ, जिसका एक और अन्य लाभ यह हुआ कि अन्य विद्यालयों ने भी इस नवाचार को अपनाया।

एक स्कूल की आत्मकथा

मैं शासकीय प्राथमिक विद्यालय व्यास नगर बोल रहा हूँ। मैं इंदौर जैसे मध्यप्रदेश के एक बड़े शहर में स्थित हूँ। मेरा निर्माण तो सन् 2008 में ही हो गया था, किन्तु चार वर्षों तक मेरा हस्तांतरण नहीं किया गया। इस कारण मुझे चार वर्षों तक कई तरह की विपदाएँ झेलनी पड़ी। तदुपरांत सन् 2012 में डॉ. रजनी पांडेय व भूतपूर्व विकास खंड शिक्षा अधिकारी श्री जय नारोलिया जी के प्रयासों से व्यास नगर बस्ती व आसपास के बच्चे मुझ तक पहुँचने, लगे तब जाकर मैंने चैन की साँस ली आपको बता दूँ कि जब मेरी शुरुआत हुई, तब मैदान में कीचड़ ही कीचड़ था; क्योंकि 11 जुलाई, 2012 में मैं अपने अस्तित्त्व में आया एक प्राइवेट स्कूल की बस मेरे मैदान में खड़ी रहती थी मुख्य प्रवेश द्वार तो गायब ही था।

आसपास के रहवासी मैदान में लगी पानी की टंकी का उपयोग अपनी-अपनी गाड़ियों को धोने में किया करते थे। इस तरह अव्यवस्थाओं का अंबार लगा हुआ था। मेरे शिक्षण कक्ष भी फर्नीचर और साज-सज्जा विहीन ऐसे दिखाई देते थे, मानो जल विहीन नदी हो। विकास खंड शिक्षा अधिकारी की सहृदयता से एक और शिक्षक श्री विशाल राणा (स. शि.) आये, तो पहली बार मेरे आँगन में 08 छात्रों की किलकारियाँ गूँजी और मैं वैसे ही प्रफुल्लित हुआ, जैसे कि वर्षा आने पर मयूर नृत्य कर उठते हैं। एक वरिष्ठ आदरणीय श्री शरद शर्मा जी भी आगे आये और उन्होंने फर्नीचर दिलवाने में मदद की। जब तीन शिक्षक एकत्रित, हुए तो मुझ पर तो सरस्वती की कृपा बरसने लगी और मेरे प्रांगण में पालकों का ताँता लगने लगा। देखते-ही-देखते 68 बच्चों की किलकारियाँ गूँजने लगी। बस फिर क्या था, अब तो मेरे वारे-न्यारे हो गये। बच्चों की खिलखिलाहट, पालकों की मुस्कराहट, शिक्षकों की लगन और अधिकारियों की मदद इन सबने मिलकर मुझे और मेरे प्रांगण को सँवारने में मदद की और अब मेरी जान में जान आ गई थी।

जब तीन शिक्षक हुए, तो सभी ने अपनी-अपनी जिम्मेदारी बाँट ली। डॉ. रजनी पांडेय ने तकनीकी सुधार , विशाल राणा ने बच्चों की शिक्षा और शरद शर्मा जी ने पालकों से संपर्क की जिम्मेदारी संभाली। अब मैं धीरे-धीरे वैसे ही लहलहाने लगा, जैसे कि खरपतवार के नष्ट होने पर फसलें लहलहाती है। मेरे कक्ष फर्नीचर , टाटपट्टी , ब्लेक बोर्ड , विद्युत पंखे और बल्ब , चार्ट आदि से सजने लगे। अगर कक्षों से बाहर मेरे मैदान की बात करूँ, तो अब वह हरे-भरे पौधे और प्रवेश द्वार से सुशोभित हो गया है। अब मेरे मैदान में बच्चे विभिन्न प्रकार के खेलों का आनंद भी लेने लगे हैं। समस्त राष्ट्रीय पर्व यहाँ बड़ी धूमधाम से मनाए जाने लगे हैं और बच्चे भी गणवेश पहन कर भाग लेने लगे हैं। जब स्कूल बेग अपने कंधे पर टाँग कर गणवेश धारी बच्चे आते हैं, तो मुझे इतनी खुशी मिलती है कि जिसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। सत्र 2019-2020 में 130 बच्चे मेरे कक्षों में पढ़ने लगे हैं। इन बच्चों के लिए मेरे पास यही आशीर्वाद है कि ये अच्छे से पढ़ें और बड़े होकर देश के सच्चे नागरिक बन विभिन्न पदों पर आसीन हो देश की सेवा करें।

विद्यालय प्रबंधन में संस्था प्रधान की भूमिका

विद्यालय विकास में संस्था प्रधान की मुख्य भूमिका है, उसे आंतरिक व बाह्य शक्तियों को उपयोग में लेकर विद्यार्थी हित साधना पड़ता हैं। दोनों शक्तियों को संतुलित रखते हुए इनके प्रति स्वयं की जवाबदेही भी करनी पड़ती हैं। संस्था संचालन हेतु व्यावहारिक कार्य प्रणाली के दस अहम बिंदु:-एक संस्था प्रधान के नाते हमें अपने कर्तव्यों के पालन के साथ समन्वयक की भूमिका का निर्वहन भी करना है। विभागीय नियमावली, संदर्शिका, इत्यादि के साथ ही हमें नवीनतम आदेशों, दिशा-निर्देशों, सूचनाओं के साथ ही विभिन्न प्रशिक्षणों में प्राप्त ज्ञान का उपयोग अपने विवेक से करना होता है। एक संस्था प्रधान हेतु सैद्धान्तिक पक्ष के कुछ बिंदु प्रस्तुत हैं -

1-विद्यालय हेतु योजना निर्माण - हमें विद्यालय योजना के अलावा भी विद्यालय हेतु दीर्घकालीन, मध्यमकालीन (5 वर्षों हेतु) व अल्पकालीन योजना (आगामी 3 माह) निर्माण कर लेना चाहिए। आगामी अल्पकालीन कार्य योजना पर हमें अत्यधिक केंद्रित रहकर संसाधनों का विनियोग सुनिश्चित करना चाहिए।

2- उपलब्ध संसाधनों का हो अधिकतम उपयोग – विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों यथा धनराशि, समय, भौतिक (वस्तुओं) एवम् मानवीय का अधिकतम एवम् अनुकूलतम उपयोग सुनिश्चित करना भी संस्था प्रधान हेतु अनिवार्य है। इन संसाधनों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानवीय संसाधन हैं इस संसाधन को साध लेने से किसी भी लक्ष्य को साधा जा सकता है। मानवीय संसाधन के उपयोग हेतु अनेक व्यवस्थाएँ, सिद्धान्त व दर्शन हैं।

3- विद्यालय में अनुशासन स्थापना – आज के सूचना प्रस्फुटन के युग में ज्ञान व सूचना सहज मिल जाती है, परन्तु संस्कार और अनुशासन दुर्लभ है। हमें विद्यालय वातावरण में संस्कार और अनुशासन को स्थापित करने में हमेशा सजग रहना पड़ेगा।

4- प्रासंगिक आदेश – विद्यालय संचालन हेतु आदेश पुस्तिका का अहम रोल है । हमारे द्वारा प्रदत्त आदेश स्पष्ट , नियमानुसार, प्रासंगिक, समयोचित होने चाहिए। आदेशों का दोहराव ना हो तथा आदेशों का पूर्ण पालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

5- सन्तुलित सह-सम्बन्ध – संस्था प्रधान व स्टाफ सदस्यों के आपसी सम्बन्ध व व्यवहार गरिमापूर्ण हो, इस हेतु सजग रहना पड़ेगा। स्टाफ सदस्यों से अनावश्यक दूरी भी ना हो तथागैरवाज़िब निकटता भी अनुचित है।

6- नियमों में एकरूपता – शासकीय संस्थान होने पर संस्था संचालन शासकीय नियमों के आधार पर ही किया जाना चाहिए। व्यक्तिगत अवधारणाओं व पूर्वाग्रहों को शासकीय संस्थान में लागू नहीं किया जाना चाहिए। शासकीय नियम सभी पर समान रूप से लागू कर एक स्वस्थ माहौल की स्थापना की जानी चाहिए। प्रत्येक निर्णय राज्य हित में, तुरंत व नियमानुसार लेकर उसे लिखित अभिलेख का रूप प्रदान करना चाहिए।

7- उच्च मनोबल – अधीनस्थ शिक्षकों का मनोबल बनाये रखना कुशल प्रबंधन है। किसी शिक्षक द्वारा किये गए अच्छे कार्य की वास्तविक प्रशंसा सार्वजनिक व लिखित रूप से की जानी चाहिए, परंतु किसी कार्मिक की कमजोरी/ गलती के बारे में उसे एकांत में व उसे सुधारने के रूप में व्यक्त करना चाहिए। एक संस्था प्रधान को व्यंग्य, मजाक से बचना चाहिए। संस्था प्रधान से प्रत्यक्ष संवाद अपेक्षित होता है। अतः उसे अपरोक्ष कथन से बचना चाहिए।

8- नियमित अभिलेख संधारण – किसी भी कार्य को समझ कर अभिमत प्रदान करें, पत्र को पढ़ने के बाद हस्ताक्षर करें, विद्यालय संचालन के मूलभूत अभिलेखों यथा- टाइम टेबल(कक्षावार, अध्यापकवार), शिविर पंचांग, अध्यापक उपस्थिति पत्रक, रोकड़ पंजिका मय केश मिलान, आदेश पंजिका, मूवमेंट रजिस्टर, पोषाहार पंजिका, छात्र उपस्थिति पंजिका, परीक्षा परिणाम पत्रक, प्रवर्ति प्रभार, स्टोर अभिलेख, वार्षिक योजना, आगंतुक पञ्जिका, शिकायत/ सुझाव पंजिका, गृहकार्य योजना, शिक्षण परिवीक्षण इत्यादि को तैयार व स्वयं की पहुँच में रखें।

9- परस्पर शैक्षिक संवाद – स्थानीय समुदाय, अभिभावकों, जनप्रतिनिधियों, गैर सरकारी संगठनों से निरंतर संवाद रखें एवम् नवीनतम विभागीय परिपत्रों, आदेशों, निर्देशों का अध्ययन कर उनको विद्यालय में पूर्ण करने हेतु कार्य के अनुसार जिम्मेदारी तय कर अनुपालन करें।

उपर्युक्त बिन्दुओं के अलावा प्रत्येक विद्यालय अपनी परिस्थितियों एवम् गुणावगुणों के अनुसार कार्ययोजना, स्टाफिंग, अनुवर्तन कर लक्ष्य प्राप्ति करे। प्रधानाध्यापक छात्रों, अध्यापकों तथा स्थानीय समुदाय के मध्य सेतु की तरह कार्य करता है। प्रधानाध्यापक अध्यापकों एवं अन्य सहायक कर्मचारियों का निरीक्षणकर्ता है। प्रधानाध्यापक प्रशासक, वित्तीय प्रबंधक, लेखाकार, निरीक्षणकर्ता आदि की समन्वित भूमिका का निर्वहन करता है। शिक्षा शास्त्री श्री उमाशंकर जी “बन्धु जी” ने संस्था प्रधान के भावों को एक प्रेरणा मन्त्र दिया है - "मैं अग्नि में रहूँ, तो तुम धूप में रहो, मैं धूप में रहूँ, तो तुम छाँव में रहो, मैं छाँव में रहूँ, तो तुम आराम करो और मैं आराम करूँ तो तुम आनंद करो।"

लोकेश कुमार राठौर
जन शिक्षक
उ.मा.वि. क्रमांक 2
शाजापुर (मध्यप्रदेश)

शिक्षक के मनोभाव

कभी सोचा न था मार्कर-डस्टर छोड़ ऑनलाइन पढ़ाऊँगी
उन मुस्कुराते बच्चों से इतनी दूर हो जाऊँगी
कभी सोचा न था ऑनलाइन पढ़ाऊँगी
रोज लेती हूँ क्लास, लेकिन मजा नहीं आता
पढ़ाने में ही मिलती है संतुष्टि
जिस फोन से दूर रहने की करती थी
अक्सर बात उसी के पास रहने को समझाऊँगी
कभी सोचा न था ऑनलाइन पढ़ाऊँगी
अब मैं कभी-कभी जाने लगी हूँ स्कूल
लेकिन वह स्कूल नहीं सिर्फ इमारत है
बिना बच्चों के सूनी बैंचे,
खाली मैदान सुनसान आँगन, कोरिडोर वीरान,
इस हालत में भी कभी स्कूल आऊँगी और मास्क लगाकर पढ़ाऊँगी
कभी सोचा न था ऑनलाइन पढ़ाऊँगी
सिर में रहता है अक्सर दर्द धीमा मन भी विचलित है
कभी वीडियो बनाती हूँ कभी गूगल टेस्ट बनाती हूँ
कभी स्क्रीन रिकॉर्डर बनाती हूँ
फिर भी लगता शिक्षण अधूरा खुद को इतना विवश पाऊँगी
कभी सोचा न था ऑनलाइन पढ़ाऊँगी
उन मुस्कुराते बच्चों से इतना दूर हो जाऊँगी
कभी सोचा न था ऑनलाइन पढ़ाऊँगी

श्रीमती नीलम राठौर प्राथमिक
शिक्षिका
शाजापुर (मध्यप्रदेश)

****

शिक्षा को समर्पित -डॉ. मसानिया

शिक्षा जगत् में मध्यप्रदेश ही नहीं, बल्कि पूरे भारत में डॉ. दशरथ मसानिया को शिक्षाविद् के रूप में जाना जाता है। इन्होंने कक्षा 1 से 12 तक सभी विषयों के ,सभी समूहों के, बच्चों के शिक्षण के लिए नवाचार किए हैं। कभी गायन से, कभी चित्रकला से, कभी लेखन से, तो कभी आकाशवाणी से, कभी चार्ट से, इस प्रकार विभिन्न सहायक सामग्रियों द्वारा स्वरचित नए शोध करके ये अपने बच्चों तक बहुत ही सरल तरीके से पहुँचाते हैं। इनकी शिक्षा का यह तरीका बच्चों को बहुत भाता है, इसलिए इनके नवाचार देश भर में सराहे गए हैं। इनके नवाचारों को समय-समय पर सोशल मीडिया द्वारा भी प्रचारित-प्रसारित किया जाता है। राज्यपाल सम्मान प्राप्त डॉ. मसानिया को विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संगठनों के द्वारा अब तक 46 सम्मानों से नवाज़ा जा चुका है।

संकलन-- संगीता भिलाला
शिक्षक, B.Ed
शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन
(मध्य प्रदेश)

परिवर्तन के पक्षधर : श्री राजेन्द्र पालसिंह डंग

जन-समूह में शासकीय विद्यालयों तथा शिक्षकों के प्रति आम धारणा यह है कि यहाँ सारी व्यवस्थाएँ अस्त-व्यस्त और सुस्त होती है ,लेकिन इस आम धारणा को परिवर्तित करने का बीड़ा उठाया श्री राजेन्द्र पालसिंह डंग जी ने ,जो कि शा.मा.वि. सुलावड़ विकासखंड तिरला जिला धार में पदस्थ हैं। उन्होंने तन-मन और धन से इन व्यवस्थाओं में आमूल- चूल परिवर्तन कर दिया।

सर्वप्रथम उन्होंने शिक्षण-सामग्री का निर्माण किया, न्यूनतम या शून्य खर्च पर निर्मित की। केवल अपनी ही नहीं, बल्कि अन्य शालाओं के शिक्षकों को प्रेरित कर वहाँ भी विभिन्न संसाधन उपलब्ध करवाये। परिणाम यह हुआ कि जन-सामान्य व पालकों के मन में शासकीय शालाओं के प्रति विश्वास बढ़ा। बच्चों में गुणवत्ता बढ़ने से वे हिन्दी, गणित ओलंपियाड, ज्ञानोदय, मॉडल और उत्कृष्ट विद्यालयों हेतु चयनित होने लगे। जिला स्तर से उनकी शाला को शाला सिद्धि के अंतर्गत सम्मानित भी किया गया।

श्री राजेन्द्र पालसिंह डंग जी जिला-राज्य के साथ राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं तथा इन्होंने असम तथा बिहार के शिक्षकों को टी.एल.एम. आधारित प्रशिक्षण भी दिया था। यदि ऐसे प्रयास हर शासकीय शिक्षक करें,तो निश्चित रूप से शासकीय विद्यालयों की दशा और दिशा दोनों ही बदल जाये। हर शिक्षक में यह सामर्थ्य है कि वह विद्यालय के साथ- साथ अपने छात्रों में भी इन विचारों का बीजारोपण कर सकता है।

****

कलम के सिपाही भले....

पहाड़ों से गिरे झरने,चट्टानों को चीर नदियाँ बही,
हर बाधा को सहते चले, कोई और नहीं है वे तो
कलम के सिपाही भले ।
तपता सूरज सिर पर जलता, आग-सी धूप जलती रहे कहीं,
फिर भी पथ पर सतत् बढ़े, कोई और नहीं वे तो
कलम के सिपाही भले ।
अज्ञान का अंधेरा पसरा हो, या कुरीतियाँ देख हँसती रहे,
वह दीपक–सा औरों के लिए जले, कोई और नहीं वे तो
कलम के सिपाही भले ।
फैला हो महामारी का प्रकोप, जैसी भी हो परिस्थिति रुकते नहीं,
वह तो सेवा भाव में लगे भले, कोई और नहीं वे तो
कलम के सिपाही भले ।
नाम मात्र में जिसके भरोसा है, माँगे जो राय तो बात बताएँ सही
ना भेदभाव, ना लालच के हाथ मले, कोई और नहीं वे तो
कलम के सिपाही भले ।
ले मशाल कर्त्तव्य पथ पर बढ़ते, उस गीली माटी का सुंदर रूप गढ़े वही,
तो बच्चे मूँछों वाली माँ के हाथों भी पले, कोई और नहीं वे तो
कलम के सिपाही भले।

लेखिका
सुश्री नेहा दुबे
माध्यमिक शिक्षक, बड़वानी

दिव्यांग बच्चे और हम

सर्व शिक्षा अभियान के तहत जब "सब पढ़ें सब बढ़ें" की बात कही जाती है, तब दिव्यांग बच्चे भी इससे अछूते नहीं है। इन विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा के बिना हम उक्त लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते।

विकासखंड भीकनगाँव जिला खरगोन में पदस्थ मोबाइल स्तोत्र सलाहकार श्रीमती प्रमोदिनी जैन विगत 14 वर्षों से पालकों से सतत् संपर्क कर उनके विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के उज्ज्वल भविष्य व स्वावलंबी बनाने हेतु शिक्षा से जोड़ने के लिए प्रेरित करती रहीं। परिणामस्वरूप भीकनगाँव विकासखंड के 35 से 40 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शासकीय मूक बधिर व अंधशाला खरगोन एवं आस्था ग्राम ट्रस्ट खरगोन समाधान छात्रावास में प्रवेश दिलाया गया है। वर्तमान में भी 20 विशेष आवश्यकता वाले बच्चे आस्था ग्राम समाधान छात्रावास खरगोन में अध्ययनरत् हैं। जब भी मूक-बधिर बच्चों की शिक्षा की बात आती है, तो हमारे मन में कई प्रश्न उठते हैं; जैसे कि दृष्टिहीन बच्चे, मूक-बधिर बच्चों से कैसे वार्तालाप कर सकते हैं ? दृष्टिहीन बच्चा बोलेगा, तो मूक-बधिर बच्चा सुन नहीं पाएगा और मूक-बधिर सांकेतिक भाषा का प्रयोग करेगा, तो दृष्टिहीन बच्चा देख नहीं पाएगा; लेकिन यह सब संभव हुआ समावेशित शिक्षा के माध्यम से।

श्रीमती जैन समय-समय पर आस्था ग्राम समाधान छात्रावास खरगोन में दृष्टिहीन बच्चों को ब्रेल लिपि का प्रशिक्षण देने जाती हैं। वहाँ कुछ मूक-बधिर, मंदबुद्धि, सामान्य बच्चों व शिक्षिकाओं ने भी ब्रेल लिपि सीखने की उत्सुकता दिखाई, तो उन्हें भी ब्रेल लिपि का प्रशिक्षण दिया गया। ठीक इसी तरह दृष्टिहीन बच्चों को सांकेतिक भाषा में अंग्रेजी अल्फाबेट सीखने की ललक हुई, तो उन्हें भी सांकेतिक भाषा में सिखाया गया।

समावेशित शिक्षा के अंतर्गत जब सभी प्रकार के विकलांग व सकलांग बच्चे साथ - साथ पढ़ते हैं, तो इन विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की विकलांगता नहीं; अपितु दिव्यांगता झलकती है। दिव्यांग बच्चों को छात्रावास में प्रवेश संबंधी और शैक्षणिक समस्या है, तो आप इनसे संपर्क कर सकते हैं।

प्रमोदिनी जैन
मोबाईल स्त्रोत सलाहकार
विकासखण्ड- भीकनगांव
जिला- खरगोन

शिक्षा की सफलता शिक्षक के हाथ में...

शिक्षा मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग व श्रेष्ठ बनाती है। शिक्षा के अभाव में मानव व पशुओं में कोई खास अंतर नहीं रहेगा। सहज-सरल सुरक्षित व श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए शिक्षा याने ज्ञान केवल मानव जाति को ही ईश्वर ने प्रदान किया है। विकास की कई सीढ़ियाँ चढ़ते हुए आज हम नये युग में प्रवेश कर गए हैं, लेकिन आज भी संसार के कई दुर्गम क्षेत्रों में शिक्षा का प्रकाश नहीं पहुँच पाया है।

मानव की मूलभूत आवश्यकताएँ रोटी, कपड़ा और मकान है। सरकारों द्वारा कई प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे सभी का जीवन स्तर ऊँचा हो। सरकारी प्रयासों को पूर्ण सफल बनाने के लिए समर्पित कर्मचारी याने कार्यकर्ता की भूमिका खास रहती है। इमारत की नींव मजबूत होना चाहिए। शिक्षा रूपी इमारत की नींव प्राथमिक शिक्षा है और इसे सफल बना सकते हैं हमारे निष्ठावान शिक्षक, और यह तभी संभव है; जब ई-शिक्षा सफलतापूर्वक लागू हो सके।

नवाचार यानी नवीन व सरल आचार इन्हीं के द्वारा हम सरकारी शिक्षा को बेहतर बना सकते हैं। शासकीय सुविधाओं व प्रयासों से ऊपर शिक्षक को अपनी भूमिका निभानी है। इसके अभाव में शत-प्रतिशत परिणाम संभव नहीं है। हमारे देश में शिक्षा के साथ पुस्तकें, वस्त्र और पौष्टिक आहार निःशुल्क है। इन सारी निःशुल्क सुविधाओं के सहारे सरकारी शिक्षा को सफल शिक्षक ही बना सकते हैं। वर्तमान में बोर्ड-परीक्षाओं में शासकीय शालाओं के परिणाम श्रेष्ठ रहते आए हैं, जिससे सरकारी विद्यालयों के प्रति जो भ्रांति थी, वह दूर होती नजर आ रही है। प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा का विशेष महत्त्व होता है।

मातृभाषा बोली सहज-सरल और शीघ्र समझ में आने वाला माध्यम है। अतः इसी का प्रयोग किया जाना चाहिए। खुशी की बात है कि नई शिक्षा नीति में इस पर खासा जोर दिया है। इससे ई-शिक्षा का मार्ग प्रशस्त होगा। कक्षा पहली की पाठ्य पुस्तकों में आरंभ से ही बच्चों को आड़ी-तिरछी-गोल-सीधी रेखाएँ बनाने व लिखने का अभ्यास दिया गया है।

अक्षर लिखना सिखाने के क्रम में परिवर्तन कर इसे सरल-सहज किया जा सकता है। मेरे विचार से सबसे पहले वह वर्ण लिखना सिखाया जाना चाहिए, जिसमें सरलता हो। युग के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए ई शिक्षा के माध्यम से शिक्षक सफलता प्राप्त कर सकते हैं। सरकारी शिक्षा को प्रभावी बनाना शिक्षकों के हाथ में है। इन्हीं हाथों से सरकारी शिक्षा सबके लिए बेहतर होगी इसमें संदेह नहीं है। सु-प्रयासों का स्वागत-अभिनंदन !

प्रमोद त्रिवेदी 'पुष्प'
सेवानिवृत्त शिक्षक
केशव नगर,
राजपुर (बड़वानी)

"चिंतन" सीखने-सिखाने का आयाम है!

"चिंतन और कक्षा-कक्ष अनुभव"

☺ चिंतन से शाला सिद्धि के सफर तक.....

मा०शा० का अकेला शिक्षक और दर्ज सं० 156 थी और उस समय अतिथि भी नही थे... तब चिंता की मुद्रा से निकल चिंतन स्वरूप बुजुर्गों की बात याद आई कि... समस्या पर चिंता न करते यदि चिंतन किया जाए तो समस्या का हल हमारे आस-पास ही होता है.....

.... बस वही "आस-पास" जैसे "ध्येय वाक्य" बन गया और फिर अपनी शक्ति को "10 गुणा" करने का माध्यम भी, मैने मेरे विद्यार्थियों को ही अपनी शक्ति बनाया... उपस्थिति बढ़ाना, जनजागरूकता लाना, सपनों की डायरी लिखना, विजन बोर्ड का निर्माण, जिद करना-पढ़ने के लिए ... हमला, प्रार्थना, नवाचार, सहभागिता, विचार मंथन, लाउडस्पीकर से P/Abs. और फिर क्या था, मेरी शाला ए प्लस ने शाला सिद्धि शाला का सफर बच्चों के ही दम पर हासिल किया और वर्तमान कलेक्टर सर श्री कविन्द्र कियावत जी से बेस्ट शाला का सम्मान भी 2014 में जिले में प्राप्त किया तो...

"जहाँ चाह है वहां राह है"

☺ चिंतन से शुरू किया गया "मंथन" आज शाला को शोध का साधन बना दिया है।

मैं यह नहीं कहूँगा कि यह सब "मैं" ने किया... पर हाँ इतना जरूर कहूँगा कि शिक्षक से आज BAC बनने का सफर चिंतन से ही छू पाया... और जब शिक्षक पूरे मनोयोग से लग जाता है तो समुदाय और शासन क्या पूरी कायनात आपका साथ देने के लिए तत्पर रहती है। फिर...

"अब पढ़ाई नही रुकेगी"

सन्तोष धनवारे (अध्यापक)
वर्तमान BAC नसरुल्लागंज
जिला सीहोर (म०प्र०)

हिन्दी भाषा और नवाचार

शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान में प्रत्येक शिक्षक का यह लक्ष्य रहता है कि उसके विद्यार्थी अव्वल रहें जल्दी से जल्दी दक्षताएँ अर्जित करें और इसके लिए विभिन्न विषयों पर वे नवाचार का उपयोग करते हैं। इस लेख में हम देखेंगे कि प्राथमिक शिक्षक त्रिलोक सिंह रघुवंशी जो कि प्राथमिक विद्यालय नौगाँवा विकास खंड देपालपुर जिला इंदौर में पदस्थ हैं , इन्होंने हिन्दी शिक्षण के लिए क्या नवाचार किया है।

नवाचार ❊ बच्चों की पाठय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य छोटी-छोटी पुस्तकों का निर्माण किया, ताकि बच्चे हिंदी पढ़ना आसानी से सीख सके। इन पुस्तकों में हिज्जे, शब्द-निर्माण, वाक्य-निर्माण आदि पुस्तकें प्रमुख है। हिज्जे नामक पुस्तक में शब्दों के हिज्जे स्तरशः शब्दों के द्वारा किए हैं। मूल उद्देश्य बच्चों को पढ़ना सिखाना रखकर ही शब्दों के स्तर का चयन किया गया है।शब्द निर्माण नामक पुस्तक का निर्माण , शब्द निर्माण की परिभाषा को आधार लेकर ही किया गया है। इस पुस्तक का आकार पोस्टकार्ड आकार का रखा है। इसमें जिस शब्द का चयन किया है। उस शब्द के एक-एक अक्षर को अलग-अलग पर पृष्ठ पर लिया है।

तत्पश्चात उस शब्द को अगले पृष्ठ पर लिया है, ताकि बच्चा पहले अक्षर पढ़े एवं बाद में उन अक्षरों से निर्मित शब्द पढ़े।वाक्य निर्माण नामक पुस्तक में भी शब्द निर्माण की ही तरह प्रक्रिया अपनाई है। एक-एक शब्द को अलग-अलग पृष्ठों पर लेकर अंत में उनसे निर्मित वाक्य को लिया है।

उपलब्धि ---बच्चे तीव्र गति से हिन्दी पढ़ना सीख गये। जो बच्चे अंकुर समूह में थे, अत्यल्प समय में ही तरुण समूह में पहुँच गए। साथ ही कक्षा 1 व 2 के बच्चे भी आसानी से हिंदी पढ़ना सीख गये।

प्रस्तुतकर्ता-
त्रिलोकसिंह रघुवंशी
शिक्षक
देपालपुर, जिला-इंदौर (म.प्र.)

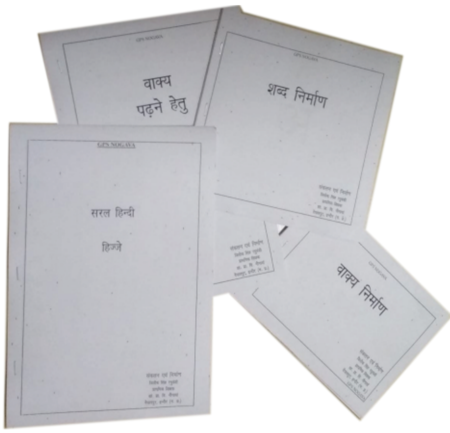

नवाचार

नवाचार-नवाचार-नवाचार हाँ हो रहे हैं आज,
चहुँओर नवाचार हर सरकारी स्कूल मेंअब हो रहे नवाचार,
इन नित्-नवाचारों से अब हम शिक्षण-सरस बनाएँगे,
नवाचारों की ही बदौलत नई क्रांति अब लाएँगे,
अपने सरकारी स्कूलों को फिर से हम चमकाएँगे,
समुदाय का विश्वास जीतकर उनकी सहभागिता बढ़ाएँगे,
नवाचारों से ही बच्चों को अब हम दक्ष बनाएँगे,
रोचक 'टीएलएम' से ही सभी विषयों का ज्ञान कराएँगे,
नवाचारों की ही बदौलत नई क्रांति अब लाएँगे।

रचनाकार -
प्रमोद गुप्ता
शा. उ. मा. वि., ज्योतिनगर
शाजापुर (म.प्र.)

शिक्षक के नवाचार
शिक्षक कौशल ने अनुपयोगी वस्तुओं से किए एक साथ तीन विषय पढ़ाने के उपयोगी नवाचार
एनीमेशन फिल्मों के निर्माण की नवाचारी पहल ने दी देश में पहचान

वैश्विक महामारी कोविड-19 के दौरान लगे लॉकडाउन में शासकीय नवीन प्रावि नयापुरा माकनी के प्राथमिक शिक्षक गोपाल कौशल ने घर में पड़ी अनुपयोगी वस्तुओं से शिक्षा को रुचिकर,सरल ,सहज बनाने हेतु उपयोगी शिक्षण सामग्री एवं टीएलएम का निर्माण किया। जैसे माचिस की खाली डिब्बियों ,मोबाइल के खाली बॉक्स, कुल्फी स्टीक एवं घर पर आई वैवाहिक पत्रिकाओं से एक साथ तीन विषय हिंदी,अंग्रेजी, गणित को पढ़ाने के साथ सामान्य ज्ञान के रोचक ,रुचिकर टीएलएम का निर्माण किया, ताकि स्कूल खुलने पर कक्षा कक्ष में प्रभावी शिक्षण में यह कारगार साबित हो और बच्चे लाभान्वित हो सके।

घर से ही डीजिलेप ऑनलाइन पढाई में भी अपनी भागीदारी करते हुए श्री कौशल द्वारा कई शैक्षिक विडियो, एनीमेशन फिल्मों का निर्माण भी किया गया, जो देशभर में सराही गई। साथ ही विडियो काल कर समय -समय पर बच्चों की मौखिक परीक्षा भी ली गई। वहीं श्री कौशल ने विषयाधारित वर्कशीटों का भी निर्माण किया और बच्चों को उपलब्ध करवाई गई, ताकि बच्चे अपनी कक्षा के विषयों पर सरलता से कार्य कर सकें और सीखने के लक्ष्य प्राप्त कर सकें। बाल केन्द्रित विषय पर बाल-कविताओं का भी सृजन किया गया, जो देश के प्रतिष्ठित पत्र,पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं।

कोरोना से बचाव के लिए लोगो में जन-जागरण हेतु अपनी कविता,नारों,दीवार-लेखन के माध्यम से 'स्वच्छ रहें-स्वस्थ रहें' ,सुरक्षित रहने का संदेश दिया। कोरोना काल में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु देश-प्रदेश की कई संस्थाओं ने श्री कौशल को कोरोना योद्धा सम्मान से भी सम्मानित किया।

लर्निंग आउटकम :- शिक्षक श्री कौशल की मेहनत परिणाम है कि आज बच्चे उत्साह के साथ ऑनलाइन क्लास में भाग ले रहे हैं और पालकों का भी सहयोग मिल रहा है। विद्यालय के चार बच्चे राष्ट्रीय स्तर पोस्टर प्रतियोगिता में भाग लेकर पर्यावरण प्रहरी एवं नवोदय क्रांति अवार्ड से सम्मानित भी हुए हैं , जिसके कारण इन बच्चों के साथ अन्य बच्चों में भी पढाई के प्रति मनोबल बढ़ा।

बच्चों ने भी किए नवाचार :- शिक्षक के साथ -साथ विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र सूरज डाबी, रोशन राठौड़, डाली राठौड़ आदि बच्चों ने भी कंकड ,फूल,पत्तियों ,माचिस की तिलियों से ज्यामितीय आकृतियों ,संख्या ,जोड़-घटाव के नवाचारी टीएलएम का निर्माण किया।

शाला की खिडकियाँ भी बच्चों को दे रही बेसिक ज्ञान - शा.न.प्रावि नयापुरा माकनी में बने भवन की खिडकियों पर अनुपयोगी चवन्नी सरिये से बनाए शब्द,अंग्रेजी वर्णमाला, एबाकस (गिनतारे) एवं राष्ट्रीय ध्वज, नारों से बच्चों में कक्षा-कक्ष में ही तीनों विषय के बेसिक ज्ञान को बिना किताब,बालपोथी के आसानी से सीख रहे हैं तथा अपने राष्ट्रीय ध्वज व राष्ट्रीय नारों को अंगीकार कर रहे हैं।
परिणाम :- नयापुरा माकनी विद्यालय के बच्चे दैनिक छात्र उपस्थिति के दौरान 'यस सर' के स्थान पर 'जय हिंद' बोलते हैं।

आलेख–
रघुवीर सोलंकी
बड़वानी म.प्र.

पुस्तक समीक्षा

अनुकरणीय प्रकाशन
राज्य शिक्षा केंद्र म.प्र. द्वारा प्रकाशित
द्विभाषी पुस्तकें बच्चों के भाषा कौशल में अहम् भूमिका निभाएगी

राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल द्वारा प्रकाशित द्विभाषी किताबों की सीरीज आकर्षक, उत्कृष्ट एवं नयनाभिराम तो है ही साथ ही पाठ्य सामग्री की दृष्टि से बेजोड़ भी है। पत्रिका का उन्नत स्तर देखकर संतोष एवं प्रसन्नता स्वाभाविक है। पत्रिका के हर पृष्ठ पर नसरुल्लागंज सिहोर के शिक्षक श्री संतोष धनवारे का कौशल परिलक्षित होता है। सुंदर चित्रों का समीचीन संयोजन देखते ही बनता है। आपका अदम्य उत्साह,आपकी दूरदर्शिता एवं इन किताबों के प्रति बच्चों आकर्षण के साथ सरलता, आनंदमय वातावरण में द्विभाषी ज्ञान को अपने कोमल मस्तिष्क में आत्मसात करेंगे। इस सीरीज के लिए शिक्षक संतोष धनवारे पूरा श्रेय राज्य शिक्षा केंद्र के उपायुक्त डॉ. अशोक कुमार जी पारीख को देते हैं, जिनके कुशल मार्गदर्शन में यह कार्य सफल हो पाया है।

मध्यप्रदेश की करीब सवा लाख सरकारी शालाओं में ये दस द्विभाषी पुस्तकें धनवारे जी द्वारा बनाये गए चित्रों से सजी हैं, जो कि चित्रों को जोड़कर चित्र कहानी के रूप में पढ़ी जा सकती है। निश्चय ही चित्रकथा के माध्यम से कक्षा **1** से **8** के बच्चों के लिए उपयोगी और सार्थक होगी। इन्हें पढ़कर बच्चा खेल-खेल और आनंदमय वातावरण में अपनी शाला के पुस्तकालय में हिंदी और अंग्रेजी के साथ-साथ, सीख और पढ़ पाएगा और कहेगा -अब पढ़ाई नहीं रुकेगी। "एक चित्र एक हजार शब्दों को जन्म देता है"- इसी ध्येय वाक्य को आत्मसात कर शिक्षक धनवारे ने अपने अद्भुत कला-कौशल की तुलिका से सुंदरतम , आकर्षक चित्र बनाकर साबित कर दिया कि शब्द अभिव्यक्ति कौशल में चित्रों की अहम् भूमिका हैं ,जो बच्चों की दक्षता उन्नयन में कारगार सिद्ध होगी। धनवारे जी का समर्पण भाव सर्वथा अभिनंदनीय है। हमारी हार्दिक बधाई एवं सभी मनोहारी चित्रांकन , रचनाकारों के प्रति विनम्र आभार।

समीक्षक
गोपाल कौशल
प्राथमिक शिक्षक
शा.नवीन प्रा.वि. नयापुरा, माकनी
नागदा, जिला-धार (म.प्र)

नवीन शिक्षण पद्धति...

मेरे द्वारा विद्यालय के बच्चों के स्तर उन्नयन कर उनकी गुणवत्ता शिक्षा के लिए शिक्षण के कई रोचक एवं नवाचारी कार्य किए जाते हैं। कक्षा 6 टी से 8 वीं के बच्चों के लिए स्मार्ट क्लास के लिए जन सहयोग से प्रोजेक्टर एवं शिक्षण कार्य करके बच्चों का स्तर उन्नयन किया जाता है।बच्चों को खेल-खेल में शिक्षण करवा कर बेहतर-से- बेहतर प्रदर्शन करके बच्चों को शिक्षण से जोड़ा जाता है।

टीवी, कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर से बच्चे रुचि ले करके सीखते हैं। उन्हें मनोरंजन के साथ सीखने का अवसर प्राप्त होता है। विद्यालय के कक्षा कक्ष में शैक्षणिक सामग्री का उपयोग करते हुए विभिन्न शैक्षिक गतिविधि करवाई जाती है। इन गतिविधियों से बच्चे शीघ्रता से और स्थायी रूप से सीखते हैं। विद्यालय में बच्चों को कक्षा अनुसार कम्प्यूटर से भी कई दक्षताओं में रोचक ढंग से सिखाया जाता है। इस विद्यालय के अधिकांश बच्चे इस प्रकार का शैक्षिक वातावरण देखकर विद्यालय में नियमित उपस्थित हो करके गुणवत्ता शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। हमारे यहाँ अन्य स्थान से प्रवेश लेने हेतु बच्चे आतुर रहते हैं।

हमारे विद्यालय में निम्न नवाचारी शिक्षण गतिविधि करवाई जाती हैं-1. मेरे विद्यालय के बच्चों को प्रोजेक्ट,टीवी और रेडियों में प्रसारित होने वाले विभिन्न कार्यक्रम के द्वारा अध्यापन कार्य करके उनके स्तर उन्नयन करने का प्रयास किया जाता है। 2.विद्यालय में मेरे द्वारा बच्चों को कहानी और नाटक करवा के भी अध्यापन करवाते हैं। 3.हमारा विद्यालय ग्रामीण अंचल का होने के कारण बच्चों की स्थानीय बोली का ध्यान रखते हुए उनको अध्यापन करवाकर स्कूल से जोड़कर शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़े रखते हैं। 4.हमारे विद्यालय में स्थानीय परिवेश से जोड़ कर बच्चों को अध्यापन करवाया जाता है। और मूलभूत दक्षताओं में दक्ष करके गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने का प्रयास किया जाता हैं। 5. कक्षावार बच्चों को प्रेक्टीकल भी करवा कर कई विज्ञान संबंधित अवधारणाओं को समझाया जाता हैं। 6. विद्यालय में स्थानीय वस्तुओं का उपयोग करते हुए बच्चों को विषयवार दक्षताओं में दक्ष किया जाता है। 7. विद्यालय में सेमिनार का आयोजन करके विद्यालय के बच्चों को सिखाया जाता है। विद्यालय में शिक्षकों द्वारा स्वयं शिक्षण सामग्री का निर्माण करके विद्यालय के बच्चों को अध्यापन कार्य करवाया जाता हैं। **जैसेः-** बच्चों से स्वयं प्रयोग करवाना एवं स्वयं की सहायक सामग्री (टी.एल.एम.) तैयार करवाना, जिससे बच्चों में स्थानीय ज्ञान की प्राप्ति होती है और सहजता से सीखने का प्रयास करते हैं। 8. विद्यालय की सभी कक्षाओं में शिक्षक द्वारा विभिन्न ग्रेड के बच्चों के सामूहिक पाँच–पाँच बच्चों के समूह का निर्माण करके शिक्षण सामग्री का उपयोग करते हुए विभिन्न गतिविधियों के द्वारा गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा दी जाती है। मैंने अपने विद्यालय की अलग-अलग कक्षाओं में बच्चों के अलग-अलग समूह बनाये हैं। ये समूह एक माह के लिए बनाये जाते हैं, फिर इन समूहों को बदल दिया जाता है। प्रत्येक समूह को एक माह बाद बदल दिया जाता है। जो समूह लीडर अच्छा कार्य नहीं करता हैं; उस समूह लीडर को भी बदल दिया जाता है। प्रत्येक समूह में चार या पाँच बच्चे होते हैं और इन समूहों में एक समूह लीडर होता है। ये लीडर अपने समूह के बच्चों को अनुशासित रखते हैं। अध्यापन कार्य मेरी मदद से करते हैं। कमजोर बच्चों को अनुशासित तरीके से अध्यापन कार्य करते हुए मौलिक दक्षताओं में दक्ष करने में हम शिक्षक की मदद करते हैं। बच्चे अपनी-अपनी क्लास में बहुत ही अनुशासित रहते हुए अध्यापन कार्य करते हैं। 9. कमजोर बच्चे जो **डी** और **ई** ग्रेड के है, उन्हें अतिरिक्त समय में उनकी रुचि अनुसार अध्यापन कार्य करवा कर उनके स्तर में सुधार करते हैं। 10. समय-समय पर अन्य व्यावहारिक गतिविधियों में भी सहभागिता बच्चों से करवाई जाती है। 11. शाला में दर्ज संख्या 260 हैं, कक्षा 7 वीं में 73 बच्चे शिक्षक मात्र 4 हैं। 73 बच्चों की कक्षा में हम समूह लीडर की मदद भी लेते हैं।

इंदरसिंह राठौर
शा.हाई स्कूल, सुलावड़
जिला-धार (म.प्र.)

साक्षात्कार-
इंदौर के राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान प्राप्त शिक्षक श्री ओ.पी.परमार जी

सन् 2014 को शिक्षक दिवस के दिन तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी के द्वारा राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान से नवाज़े गए शिक्षक से हमारे सह-संपादक विनोद सोनगीर की बातचीत के कुछ अंश प्रस्तुत हैं-

प्रश्न - परमार जी , आपका संक्षिप्त परिचय और पदस्थ संस्था और उस संस्था के बारे में बताइए, जहाँ किए गए प्रयासों से आपको इतने सम्मान प्राप्त हुए ?

ओ.पी.परमार-- मेरा पूरा नाम ओमप्रकाश परमार है। मैं सहायक शिक्षक हूँ। वर्तमान में इंदौर जिले के रालामंडल संकुल के शासकीय माध्यमिक विद्यालय असरावद खुर्द में पदस्थ हूँ। मेरी प्रथम नियुक्ति सन् 1995 में शासकीय प्राथमिक विद्यालय उमरीखेड़ा में हुई थी।

प्रश्न--आपके द्वारा किए गए उन नवाचारों के बारे में जानकारी दीजिए, जिन्होंने आपको राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान तक पहुँचाया ?

श्री परमार -- मेरी प्रथम नियुक्ति एक शिक्षक के रूप में 1995 में प्राथमिक विद्यालय उमरीखेड़ा में हुई थी। मैंने देखा कि यहाँ पर पालकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता में अत्यंत कमी थी, जिसका एक प्रमुख कारण यहाँ निवास करने वाले अधिकतर बच्चे सपेरा नाथ समुदाय के थे; जिनका प्रमुख कार्य भिक्षा वृत्ति करना था। पालकों के साथ बच्चे भी इस कार्य हेतु जाते थे। साथ ही यहाँ बालिकाओं को शिक्षा के प्रति रुचि अत्यंत कम थी। मैंने इसे चुनौती के तौर पर लिया और सर्व प्रथम पालकों से संपर्क कर उनको शिक्षा के महत्त्व और बालिका शिक्षा की आवश्यकता को समझाया।

प्रश्न-- इस कार्य में आपको कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ा ?

श्री परमार - समस्याएँ तो कई थी, परंतु प्रमुख समस्या उनको भिक्षावृत्ति से मुख्य धारा की ओर जोड़ने में बहुत समस्या आई।

प्रश्न--इसके लिए आपने क्या किया ?

श्री परमार - मैंने शासन की सुविधाओं के अतिरिक्त स्वयं और अपने स्टाफ की मदद के सामाजिक और स्वयं सेवी संस्थाओं जैसे रोटरी क्लब, लायंस क्लब, आसपास के कॉलेज , फैक्ट्री आदि से मदद लेकर बच्चों के लिए मूलभूत सुविधाएँ जैसे- फर्नीचर, स्वच्छ पेय जल, शौचालय , स्वेटर , जूते मोजे , टाटपट्टी आदि की सुविधाएँ जुटाकर अपनी शाला को अशासकीय विद्यालय के समान उन्नत बनाने के प्रयास किए। साथ ही स्वयं के व्यय से अशासकीय विद्यालयों के समान बच्चों को आइडेंटिटी कार्ड , टाई बेल्ट , वॉटर बोतल आदि की सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई। इन सभी नवाचारी प्रयोगों से पालकों के मन में भी विश्वास जागा और जहाँ मेरी नियुक्ति के समय विद्यालय में 70 से 80 बच्चे दर्ज थे; उनकी संख्या बढ़कर 200 के करीब पहुँच गई।

प्रश्न - बालिकाओं की संख्या में वृद्धि किस प्रकार हुई ?

श्री परमार - बालिकाओं की संख्या को बढ़ाने के लिए मैं सतत् उनके पालकों से , ग्रामवासियों और ग्राम पंचायत की मदद से संपर्क करता रहा। उनको बालिका शिक्षा के महत्त्व उनकी सफलता के विषय में बताता रहा, जिससे उनके मन में शिक्षा के महत्त्व का प्रसार हुआ और उन्होंने अपनी बालिकाओं को ज्यादा-से-ज्यादा विद्यालय भेजने हेतु सहमति दी और वे भी प्रयास करने लगे।

प्रश्न -- आपके स्टाफ का सहयोग किस प्रकार रहा ?

श्री परमार - जब मेरी नियुक्ति हुई थी, उस समय हम तीन ही शिक्षक पदस्थ थे। फिर धीरे-धीरे नई नियुक्तियाँ हुई और हमारा स्टाफ बढ़कर 8 हो गया ।सभी का बहुत सहयोगात्मक रवैया रहा। सभी ने बहुत मदद की।

प्रश्न-- आपने शिक्षा की गुणवत्ता को किस प्रकार बढ़ाया ?

श्री परमार - जब विद्यालय प्राथमिक से उन्नत होकर माध्यमिक हुआ, तब बच्चों को पढ़ाई में आने वाली कठिनाइयों को समझा , उनको गणित ,विज्ञान ,अंग्रेजी और लिखने-पढ़ने में आने वाली कठिनाइयों को विशेष कक्षाएँ लगाकर , गृहकार्य देकर , दक्षता उन्नयन के माध्यम से , टी.एल. एम., खेल-खेल में शिक्षा द्वारा कठिन अवधारणाओं को सरलतम रूप में समझाने का प्रयास किया।

प्रश्न-- आपकी प्रमुख उपलब्धियाँ कौन-कौन सी है ?

श्री परमार - शिक्षा के क्षेत्र में लगातार अच्छा कार्य करने के कारण मुझे जिला स्तरीय शिक्षक सम्मान, आचार्य सम्मान, राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान, मालव रत्न सम्मान, पत्रिका एक्सीलेंस अवार्ड, विनय उजाला राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान और राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त दक्षता उन्नयन,सर्व शिक्षा अभियान में भी उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुए हैं।

प्रश्न -- आप अपनी शिक्षा यात्रा के साथ वर्तमान शिक्षकों को क्या संदेश देना चाहेंगे ?

श्री परमार -- मैंने अपने जीवन का सर्वस्व बच्चों की शिक्षा को समर्पित किया है और मैं लगातार बच्चों की शिक्षा के लिए संकल्पित हूँ। आप सभी शिक्षक अपना कर्म अच्छे से करते रहें। और शिक्षा के लिए लगातार प्रयास करते रहें। त्याग और समर्पण से सफलता मिलती है। मेरा जीवन जब तक है मैं, शिक्षा के अलख को हमेशा जगाता रहूँगा।

संकलन-
विनोद कुमार सोनगीर
इंदौर

त्याग और समर्पण के प्रतीक :श्री शंकरलालजी काग

कहते हैं समर्पण से ईश्वर-प्राप्ति भी अत्यंत सुलभ हो जाती है। बालक ध्रुव, प्रहलाद, सुदामा जी और ऐसे कई उदाहरणों से हमारे पौराणिक ग्रंथ भरे पड़े हैं। ऐसे ही त्याग और समर्पण के प्रतीक हैं-श्री शंकरलाल जी काग।धार जिले से लगभग 124 किमी दूर मनावर विकासखंड का शा.कन्या प्रा.विद्यालय गुलाटी है, जहाँ श्री काग पदस्थ हैं। जब इस विद्यालय का भौतिक स्वरूप देखते हैं ,तो आँखें खुली रह जाती है, मन यह मानने को तैयार नहीं होता कि यह शासकीय विद्यालय है। जी हाँ,इसकी भौतिक संरचना के साथ - साथ शैक्षणिक संरचना भी निजी विद्यालयों की व्यवस्थाओं को भी मात करती है। यहाँ की छात्राएँ तो यह तक कहती हैं कि "सर! दीपावली की छुट्टियाँ अधिक मत रखना।" इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि इस विद्यालय की क्या उपलब्धि है?

श्री काग ने अपने त्याग और समर्पण से इसे यह स्वरूप दिया है।अपने निजी धन से सभी कमरों में वेट्रीफाइड टाइल्स, छात्राओं के बैठने के लिए कालीन ,हाइटैक शिक्षा के लिए 43 इंच का प्लाज्मा टीवी, दो स्पीकर व एलसीडी ,बरामदे में बारीक चूरी,मॉडर्न हैंडवॉश ,बेहतर बाथरूम, घर जैसा किचन ,विद्यालय के दोनों ओर प्राकृतिक सुषमा बढ़ाने वाले सुंदर पेड़-पौधे, प्रत्येक छात्रा के लिए ड्रेस व ठंड से बचने के लिए स्वेटर, ट्यूबवेल के लिए सबमर्सिबल पम्प आदि सुविधाएँ वहाँ अध्ययनरत् छात्राओं के लिए उपलब्ध करवायी हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इनके समर्पण को देखकर गाँव के श्री हीरालाल जी सोलंकी ने 75×150 फीट का भूखंड विद्यालय के लिए दान कर दिया। इन्होंने स्वयं ही 5-7 खंभे गाड़कर विद्यालय में विद्युत की व्यवस्था की। उनका यह विद्यालय जिले का आदर्श व सर्वश्रेष्ठ विद्यालय है।यहाँ जिला तथा राज्य स्तर के अधिकारी भी निरीक्षण करके आश्चर्य -चकित व अभिभूत हो चुके हैं।

यदि मन में दृढ़-संकल्प ,प्रबल इच्छा-शक्ति ,समर्पण व त्याग हो,तो आदरणीय काग जी के ही समान हमारे सारे शासकीय विद्यालयों की काया पलट सकती है। मैं इस सत्य को यहाँ इसीलिए प्रस्तुत कर रहा हूँ कि हमारे सभी साथी इनसे प्रेरित हों। अपने विद्यालय को यथार्थ में अपना ही माने तथा उसकी उन्नति हेतु निरंतर यूँ ही प्रयत्न करते रहें।

प्रस्तुति
डॉ. जगदीश चौहान
(माध्यमिक शिक्षक)
शा.हाईस्कूल, मनावर
(जिला–धार)

गृह कार्य और पुरस्कार

नवाचार शब्द का शाब्दिक अर्थ देखे तो नव+आचार इन दो शब्दों से मिलकर नवाचार शब्द बना है, जिसका तात्पर्य होता है-नये-नये विचार या तकनीक को आचरण में लाकर अपेक्षित परिणाम प्राप्त करना। मध्यप्रदेश में सरकारी शिक्षा में इस तरह के कई नवाचारों का प्रयोग शिक्षक साथी कर रहे हैं। अब हम देखते हैं धार जिले की मनावर तहसील के संकुल गणपुर के उत्कृष्ट प्राथमिक विद्यालय देवगढ़ का नवाचार जहाँ पर मुकेश मेहता , दुर्गेश पाटीदार और महेश अलावे शिक्षक रूप में वर्तमान में पदस्थ हैं।

नवाचार -होमवर्क और पुरस्कार प्रतियोगिता -

विद्यालय में बच्चों को थ्री इन वन कॉपियाँ वितरित कर हिंदी, अंग्रेजी और गणित विषयों का शब्दार्थ, कविता और गिनती व पहाड़े का होमवर्क दिया जाता है। जब बच्चे होमवर्क कर जँचवाने आते हैं, तो घेरे में बैठाकर होमवर्क कॉपी को जाँचा जाकर त्रुटि, सुधार के साथ गुड़ ,बेटर, बेस्ट के स्टार दिए जाते हैं। 5 गुड लाने पर एक पेंसिल ,10 गुड लाने पर एक पेन ,5 बेटर लाने पर एक कंपास, बेस्ट व स्टार लाने पर स्कूल बैग जैसी सामग्री बच्चों को पुरस्कार स्वरूप माह में प्रदान की जाती है। इससे बच्चों में होमवर्क करने की ललक रहती है। उनके अक्षर भी सुधरते हैं। सुंदर लेखन की ओर अग्रसर होते हैं। शब्दार्थ, कविता, गिनती , पहाड़े याद भी होने लगते है एवम् बच्चे कॉपियों के पेजों को फाड़ते भी नहीं हैं, क्योंकि उन्हें प्राप्त गुड-बेटर- बेस्ट गिनवाना होते हैं। प्रतियोगिता की भावना भी उत्साहित रखती है। इसी तरह आदर्श विद्यार्थी ,उत्तम कोर्स रखने और सर्वाधिक उपस्थिति वाले बच्चों को भी पुरस्कृत किया जाता है।

भूमि से भवन तक
एक शाला की विकास यात्रा

श्रीमती रुकमणि अलावा
प्राथमिक शिक्षक

श्री सुरेश अलावा
प्राथमिक शिक्षक

श्री भूपेन्द्र उपाध्याय
प्राथमिक शिक्षक

हमारे देश की आबादी का लगभग सत्तर प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्रों में होने से शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने में शासन-प्रशासन को बहुत-सी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। शिक्षा क्षेत्र ऐसा है कि इसका सीधा संबंध शिक्षक से है। किसी भी देश को संपूर्ण शिक्षित करने में वहाँ के शिक्षक का सबसे बड़ा योगदान होता है। एक शिक्षक को धरातल पर बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, लेकिन वह अपने हौसले से हर कठिनाई से सामना कर जीत हासिल कर ही लेता है। ऐसे ही शिक्षकों के हौसले की एक कहानी है, जिन्होंने भवन-विहीन शाला से अध्यापन कार्य शुरू किया और आज भूमि से भवन तक का सफर सफलतापूर्वक पूर्ण किया। आइए सुनते हैं-शासकीय प्राथमिक विद्यालय चिंता फलिया धनोरी विकास खंड सेंधवा जिला-बड़वानी की कहानी शिक्षक भूपेंद्र उपाध्याय की जुबानी।

हमारी शाला की स्थापना सन् 2010 में युक्ति–युक्तकरण के माध्यम से चिंता फलिया धनोरी में हुई थी। उस समय हमारे पास संस्था का कोई शासकीय भवन नहीं था। ऐसी स्थिति में नामांकन अनुसार कक्षावार विभाजन कर बच्चों का अध्यापन कार्य करवाना चुनौतीपूर्ण था, किंतु गाँव की भूतपूर्व सरपंच महोदया श्रीमती सुमाबाई पति श्री शोभाराम डावर द्वारा शाला संचालन के लिए सांस्कृतिक भवन में एक कक्ष की व्यवस्था की, जहाँ पर मैंने संस्था की नींव रखी और अध्यापन कार्य आरंभ किया। इसी बीच सत्र 2010 में वर्तमान प्रधानपाठक श्री सुरेश अलावा की पदस्थापना संविदा शिक्षक वर्ग 3 के रूप में हुई। अब संस्था के सफल संचालन की जिम्मेदारी हम दोनों शिक्षकों के कंधों पर थी। हमारा सबसे पहला प्रयास शाला में अधिक-से-अधिक बच्चों का नामांकन करवाने का था, जिसके लिए हमने घर-घर जाकर शिक्षा के महत्त्व पर बल देकर व पालकों से अपने बच्चों का शाला में नामांकन करवाने व शिक्षा प्रणाली से जोड़ने हेतु प्रेरित किया। धीरे-धीरे शाला में बच्चों की संख्या में इजाफा होने के साथ ही एक कक्ष हमें छोटा पड़ने लगा, तो कुछ समय थोड़े बच्चों को पेड़ के नीचे प्रकृति के सान्निध्य में शिक्षा देना आरंभ किया। तदुपरांत हमने पालकों व एसएमसी की बैठक का आयोजन किया और उनके सामने हमने समस्या रखी। सभी पालकों की सहमति से पास ही में एक व्यक्ति के मकान में एक हॉल की व्यवस्था की गई। हमारा प्रयास और कत्तव्यों का सही निर्वहन करते हुए देखकर व भवन की आवश्यकता को महसूस करते हुए भूतपूर्व सरपंच महोदया के सहयोग से कुछ समय पश्चात् स्कूल भवन की स्वीकृति मिल गई और जिसका निर्माण कार्य सत्र- 2012-13 में पूर्ण हुआ। अब हम कक्षा विभाजन कर सुगमता के साथ अध्यापन कार्य करवाने में स्वतंत्र थे, किंतु फिर भी हम संतुष्ट नहीं थे; क्योंकि नामांकन के अनुरूप बच्चों का शाला में ठहराव नहीं था और पलायन की बड़ी समस्या थी, जिसके लिए हमने कई प्रकार से पालकों व बच्चों को मोटिवेशन करने का कार्य किया जैसे- गाँव में जागरूकता रैलियाँ निकालना, समय-समय पर एसएमसी की बैठकों का आयोजन करना, शासकीय योजनाएँ गिनाना और शिक्षा के महत्त्व व लाभ बताना इत्यादि प्रकार से लगातार हमारी कोशिशें रही, जिसका असर धीरे-धीरे बढ़ने लगा और बच्चों की दैनिक औसत उपस्थिति में काफी सुधार हुआ। इसी के साथ हम दोनों शिक्षक दुगुनी मेहनत के साथ कार्य करने लगे, जिसका परिणाम हमारे सामने आने लगा और प्रत्येक वर्ष हमारी शाला से विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से उत्कृष्ट शाला, कन्या परिसर और एकलव्य जैसी संस्थाओं में बच्चों का चयन होने लगा जो कि स्थानीय लोगों के लिए भी प्रेरणा स्रोत बन गया। परिणामस्वरूप अन्य गाँवों से भी अभिभावकों ने बच्चों को हमारी संस्था में दाखिल करवाना शुरू कर दिया और वर्तमान स्थिति में लगभग 15 बच्चे अन्य गाँव से रिश्तेदारों के यहाँ निवासरत् रह कर हमारी संस्था में अध्यापन कार्य करने लगे।

सत्र 2013-14 में एक शिक्षिका श्रीमती रुकमणि अलावा अन्य शाला से स्थानांतरित होकर शाला में आ गए। अब हम तीनों मिलकर विद्यार्थियों की शैक्षिक के साथ सह-शैक्षिक दक्षताओं को पूर्ण करने में तन-मन-धन से लग गए। हमारी लगनशीलता को देख कर जन समुदाय का भरपूर सहयोग मिलने लगा और आज हमारे विद्यालय में दीवारें चित्रों से , कक्ष फर्नीचर से सु-सज्जित हो गए हैं, जिसकी विकास खंड ही नहीं; अपितु पूरे जिले में तारीफ होने लगी है। इस प्रकार हमारी लगनशीलता और कर्त्तव्य के प्रति ईमानदारी से हमारी शाला ने भूमि से भवन तक का सफर पूर्ण किया।

परिश्रम से परिणाम बदलते हैं....

हम बचपन से एक मशहूर शेर सुनते आए हैं कि आसमाँ में भी सुराग हो सकता है एक पत्थर तो दिल से उछालो यारो । इस शेर को पढ़ने के बाद आत्मबल में वृद्धि होती है और इसी तरह के शेर तथा सुवाक्य, जो आत्मबल और मनोबल बढ़ाने के लिए दार्शनिकों और शायरों ने सृजित किए हैं; वे मानव के लिए बहुत सहायक हैं । जो मानव इनसे सीख लेकर जीवन में अमल में ले आता है, वह जीवन में मनोनुकूल परिणाम प्राप्त कर लेता है । आइये, अब बात करते हैं धार जिले के शा.प्रा.वि. गवला (जन शिक्षा केन्द्र शा.बा.उ.मा.वि. केसूर) की सफलता की कहानी की ।

गवला, जो कि बहुत छोटा-सा ग्राम है और जहाँ की जनसंख्या मात्र 436 है । यहाँ के शासकीय शाला के बच्चों का शिक्षण कार्य रुचिपूर्ण व आनंददायक वातावरण में किया जाता है, जिससे बच्चे स्वयं किसी भी कठिन अवधारणा को हल करने का प्रयास करते हैं । शिक्षक विष्णु कुमार सोलंकी और श्रीमती भारती वर्मा अपने तरीकों से सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण कर बच्चों के बीच बैठ जाते हैं और फिर बच्चों में बच्चे बन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया आरंभ करते हैं और इसका परिणाम यह आता है कि बच्चे बिना झिझके सब कुछ सीख जाते हैं । इनकी इसी तकनीक के कारण यहाँ उपस्थिति नब्बे प्रतिशत से ऊपर रहती है, क्योंकि बच्चों को घर जैसा माहौल मिलता है । वर्तमान में इस शाला में 54 बच्चे दर्ज हैं । यदि किसी दिन कोई बच्चा अनुपस्थित रहता है, तो शिक्षक तत्काल पालक पंजी में से संबंधित पालक का मोबाइल नंबर लेकर दूरभाष पर संपर्क करते हैं और बच्चे का स्कूल न आने का कारण जानते हैं ।

इस सारी गतिविधि से पालकों का शिक्षक के प्रति विश्वास जाग्रत होता है और बच्चों की नियमित उपस्थिति भी बनी रहती है । एक और दूसरा फायदा यह मिलता है कि बच्चों के सामने ही पालकों से फोन पर संपर्क किया जाता है, तो अन्य बच्चे अकारण गैर हाज़िर रहने की सोचते भी नहीं हैं । अधिकतर यह देखा गया है कि प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए अंग्रेजी और गणित को कठिन विषय के रूप में देखा जाता है, लेकिन इस शाला के बच्चे अंग्रेजी और गणित में भी अच्छा प्रदर्शन कर बेहतर परिणाम दे रहे हैं और यह सब हुआ है । नवाचार के रूप निर्मित की सहायक शिक्षण सामग्री और शिक्षकों की लगन और मेहनत से और इसलिए यह बात सार्थक सिद्ध होती है कि परिश्रम से परिणाम बदले जा सकते हैं ।

प्रस्तुतकर्ता–
श्री विष्णु सोलंकी
शा.प्रा.वि., गवला
धार (म.प्र.)

शून्य निवेश नवाचार विज्ञान अन्ताक्षरी

सामान्यतः यह देखा गया है कि विज्ञान विषय में बच्चों को तत्त्वों के नाम उच्चारण में कठिनाई होती है। यदि किसी शब्द या वाक्य को प्रतिदिन उच्चारित किया जाय, तो यह उच्चारण की समस्या स्वयं हल हो सकती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए शून्य निवेश नवाचार को ध्यान में रखते हुए विज्ञान अंताक्षरी को नवाचार के रूप में अपनाया गया और अनुकूल परिणाम भी प्राप्त किए गए। समस्या का विषय -बच्चों के द्वारा कठिन शब्दों का सही-सही उच्चारण नहीं कर पाना, समस्या का निदान- ऐसे शब्द; जो उनके शब्दकोश में दूर-दूर तक नहीं थे, उनको पढ़ना, समझना, उच्चारण करना बहुत कठिन था।

यह वह क्षेत्र था, जहाँ साधारण हिन्दी शब्दों को समझना ही कठिन होता था; वहाँ विज्ञान में प्रयुक्त शब्द जैसे- क्रिस्टलीकरण, वाष्पीकरण,निर्जलीकरण,प्रकाश-संश्लेषण, न्यूट्रॉन,इलेक्ट्रान,प्रोटान ऐसे अनगिनत शब्दों के उच्चारण की समस्या से अन्त्याक्षरी का उदय हुआ।

नवाचार का क्षेत्र -

1- विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता
2- उचित एवं सक्रिय अधिगम वातावरण का विकास
3- समूह में कार्य करते हुए सक्रिय रहते हैं
4- शिक्षक और छात्रों को रिश्ते में प्रगाढ़ता
5- रटने की प्रवृत्ति का कम होना
6- बाल केन्द्रित शिक्षक पध्दति
7- विद्यार्थियों की झिझक दूर होना
8 -सहपाठियों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का विकास
9-छात्रों के मध्य मित्रता एवं परस्पर सहयोग की भावना का विकास
10- शब्दों का स्पष्ट एवं स्थायी रहना11- सभी विषयों के लिए उपयोगी

खेल के नियम -

1- छात्रों के समूह बना लीजिए
2 - अक्षर मिलने पर पहला ग्रुप हाथ खड़ा करें
3- शिक्षक क्रमवार प्रत्येक विद्यार्थी से पूछें
4 - पाठ्य पुस्तक से पढ़ाई गई विषय वस्तु को सोचने व उसमें से शब्दों को खोजने को कहें
5 'ण' अक्षर से शब्द नहीं होने के कारण इसे न में परिवर्तन करना होता है

आवश्यक सामग्री - एक पेन और एक कॉपी

समय सीमा - कोई सीमा नहीं

क्रियान्वयन के चरण -

1- बच्चों को समूह में बाँटे, ये समूह कक्षाओं के बीच भी बनाए जा सकते हैं या छात्र-छात्राओं के बीच भी
2 - शुरूआत में केवल शब्दों को लें
3 - शब्दकोश तैयार होने के बाद समझाये गये शब्दों को पूछें, उत्तर सही मिलने पर छात्रों को नम्बर देवें

छात्र	छात्राएँ
विज्ञान,नाइट्रोजन चक्र, नस, तत्त्व	नाइट्रोजन, क्रिस्टलीकरण, संयोजकता, वाष्पीकरण
नवकरणीय, कोशिका झिल्ली, रायजोबियम, युट्रिकुलेरिया	यौगिक, लीवर, माइट्रोकोन्ड्रिया

नवाचार से लाभ -

नवाचरी शिक्षिका
श्रीमती सुनयनी शुक्ला
शा. मा. वि. मनियावदा, उज्जैन

चार व आठ से भाज्य संख्याओं की पहचान हितैषी तकनीक से

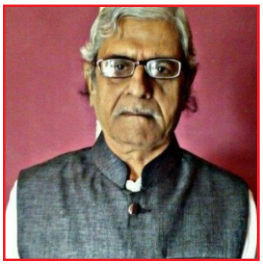

चार व आठ से भाज्य संख्याओं की पहचान हितैषी तकनीक से

हम जानते हैं कि जब किसी संख्या का इकाई अंक 0,2,4,6 या 8 हो तो वह संख्या दो से भाज्य यानी सम संख्या होती है । जैसे- 36, 68, 140, 204, 332, 576, 588

प्रश्न ये है कि 2 से भाज्य उपर्युक्त संख्याएँ क्या 4 से भी भाज्य हैं ?

यहाँ हम एक ऐसे नए सूत्र (नियम)

को बता रहे हैं जिसके उपयोग से बिना भाग दिए ही 4 से भाज्यता का ज्ञान हो जाएगा। नियम निम्नलिखित हैं-

1. जब किसी संख्या का इकाई अंक 0 ,4 या 8 हो तो दहाई का अंक सम या शून्य(0 ,2 ,4 ,6 ,8) हो तो पूरी संख्या 4 से भाज्य होगी। जैसे- 68 , 140 , 204 , 588

2.जब संख्या का इकाई अंक 2 या 6 हो तो दहाई अंक विषम(1 ,3 ,5 ,7 ,9)होने पर पूरी संख्या 4 से भाज्य होगी - जैसे- 36 , 212 , 332, 576

संख्याएँ 4 से भाज्य होंगी एक दृष्टि में जब-

इकाई अंक हो---तो दहाई अंक हो

0, 4, 8 | सम/शून्य

| (0, 2, 4, 6, 8)

-- --

2, 6 | विषम

| (1, 3, 5, 7, 9)

अब यदि कोई संख्या 4 से भाज्य है तो वह 8 से भाज्य है या नहीं? 8 से भाज्यता हेतु निम्न शर्तें उपयोगी हैं-

1. यदि किसी 4 से भाज्य संख्या में दहाई व इकाई के अंकों से बनी संख्या अगर 8 से भाज्य है तो सैकड़े का अंक सम होने पर पूरी संख्या 8 से भाज्य होगी-

जैसे- 240, 432, 696

2. किन्तु दहाई इकाई अंकों से बनी संख्या 8 से अभाज्य है तो सैकड़े का अंक विषम होने पर पूरी संख्या 8 से भाज्य होगी-

जैसे- 168, 312, 3744

नियम एक दृष्टि में- 8 से भाज्यता हेतु -

4 से भाज्य संख्या के दहाई इकाई अंकों से बनी संख्या यदि 8 से भाज्य हो तो अभाज्य हो तो

संख्या का सैकड़े संख्या का सैकड़े

का अंक सम हो का अंक विषम हो।

प्रबोध मिश्र 'हितैषी'
से.नि. प्राचार्य
सुखविलास कॉलोनी बड़वानी
(म.प्र.) 451551

जल संरक्षण:- एक-एक बूँद का उचित उपयोग

"आज जल की अहमियत से कोई भी अनजान नहीं है| फिर भी जाने अनजाने ही हम सब जल को कहीं-ना-कहीं व्यर्थ बहाते हैं या बहते देखते रहते हैं |इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर हमारे स्कूल में जल संरक्षण एवं पुनः उपयोग हेतु निम्न कार्य किए जा रहे हैं:-

1 सर्वप्रथम छात्रावास परिसर ,स्कूली बच्चों के पानी पीने व हाथ धोने के लिए जो नल लगे हैं, उनका उपयोग सदा होता रहता है | उसे पानी को पीछे तरफ एक गड्डे और नाली के माध्यम से खेत तक पहुँचाया जाया गया है, ताकि उसका उपयोग हो सके|

2 बाहर जहाँ पानी की टंकी रखी है, वहाँ भी छात्राएँ पानी पीती है |उस पानी को भी बाहर एक नाली के माध्यम से पेड़ पौधे तक पहुँचाया है; जिससे बिना सिंचाई के ही पौधों को पर्याप्त पानी मिलता रहता है; गर्मी में नमी व ठंडक बनी रहती है |

3 वर्षा जल की एक-एक बूँद बचाने हेतु स्कूल में वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाए गए हैं और छात्राओं तथा उनके परिवारों को जागरूक करने हेतु अपनी छतों के पानी को पाइप द्वारा जमीन में उतारने की व्यवस्था कर सके या पंचायत की सहायता से करें |

4 एक जागरूकता रैली का आयोजन किया, जिसमें छात्राओं ने सभी को अपने नारों से जागरूक किया तथा मोहल्लावार उन छात्राओं को उस मोहल्ले के टूटे -नल ,बहता- नल ,बिना नल वाली टंकी आदि की जानकारी लानी थी, जिसे पंचायत में देकर तुरंत सुधार कार्य करवाया जा सके और जल की बूँद–बूँद बचायी जा सके|

5 मग्गे- बाल्टी का तथा आधा गिलास पानी का मूल मंत्र अपनाने की शपथ सभी को दिलाई गई है उसे सभी ने अपनाया भी|

6 इस तरह आज हमारा ग्राम तिल्लौर खुर्द गर्मियों में भी पानी से परिपूर्ण व हरा-भरा बना रहता है|

श्रीमती अर्चना लवानिया
माध्यमिक शिक्षक
शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय
तिल्लौर खुर्द, जिला-इंदौर

नवोदय क्रान्ति परिवार भारत एवं मध्यप्रदेश के कार्यक्रमों की झलकियाँ

दैनिक भास्कर

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

इंदौर, गुरुवार 06 फरवरी, 2020 | माघ शुक्ल पक्ष-12, 2076

सुझाव : शाप्रावि के शिक्षक ने अमृतसर में आयोजित नेशनल कॉन्फ्रेंस में नवाचार साझा किए

संतोष जायसवाल

नागदा| अमृतसर (पंजाब) नवोदय क्रांति भारत ने नेशनल एकेडमी ऑफ फाइन आर्ट्स ऑटोडिरियम में भारत के सरकारी शिक्षकों के लिए नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित की थी। इसमें शासकीय नवीन प्रावि नयापुरा-माकनी के शिक्षक गोपाल कौशल को गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व नवाचार पर सुझावात्मक विचारों को साझा करने के लिए आमंत्रित किया था। कौशल ने अपने नवाचार 22 राज्यों से आए शिक्षकों, शिक्षाविदों के बीच साझा किए। राजस्थान के नवाचारी शिक्षक चैनाराम की हिंदी प्रभा पुस्तक का भी विमोचन किया गया। कॉन्फ्रेंस में नवोदय क्रांति परिवार द्वारा अमृतसर के स्वर्ण मंदिर, जलियावाला बाग, बाघा बार्डर आदि का भ्रमण कराया। जहां पर देश सेवा का पाठ भी पढ़ाया गया।

मनासा : नयापुरा माकनी स्कूल को भी मिला स्मार्ट स्कूल अवॉर्ड

शिक्षक गोपाल कौशल राष्ट्रीय नवोदय क्रांति अवॉर्ड से कुरुक्षेत्र में सम्मानित

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

मनासा. शासकीय नवीन प्रावि नयापुरा माकनी नागदा के शिक्षक गोपाल कौशल को शिक्षा में उत्कृष्ट कार्यों एवं नवाचारों के लिए नेशनल नवोदय क्रांति अवार्ड का सम्मान मिला। वहीं शा.न.प्रावि नयापुरा माकनी को बेहतरीन शैक्षिक गतिविधियों एवं सुविधाओं के लिए नवोदय क्रांति नेशनल स्मार्ट स्कूल अवार्ड से नवाजा। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के ऑडिटोरियम हॉल कुरुक्षेत्र में देश की सरकारी शिक्षा को बेहतरीन बनाने के उद्देश्य से नवोदय क्रांति परिवार द्वारा आयोजित राष्ट्रीय शैक्षिक शिविर व सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि हरियाणा सरकार के राज्यमंत्री कृष्ण बेदी ने शिक्षक कौशल को राष्ट्रीय नवोदय क्रांति अवार्ड एवं नवाचारी नेशनल स्मार्ट स्कूल अवार्ड से कुरुक्षेत्र में सम्मानित किया।

शिविर में किग्स मिड स्कूल इंग्लैंड की भारतीय उपउच्चायोग की काउंसलर डॉ. रति चांदना, 27 वर्ल्ड रिकार्डर्स से सुशोभित मैथमेटिक्स एक्सपर्ट डॉ. हिम्मत भारद्वाज कटौर, डॉ. विजय चावला विशिष्ट अतिथि थे। शिविर में देश के 15 राज्यों एवं सत्यमेव जयते फाउंडेशन यूएसए के प्रतिनिधि विजय वर्मा के साथ-साथ अमेरिका, इंग्लैंड, जार्जिया आदि देशों से प्रतिनिधियों को कौशल ने अपने शैक्षिक नवाचारों की बुकलेट भेंट कर अपनी गतिविधियों से अवगत करवाया।

नवोदय क्रांति के संस्थापक डिम्हो ने उद्देश्यों से रूबरू करवाते हुए कहा कि एक अप्रैल तक प्रदेश के 500 स्कूलों को स्मार्ट स्कूल बनाया जाएगा। वहीं 5 हजार स्मार्ट क्लास रूम तैयार करवाए जाएंगे। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम के लिए सत्यमेव जयते संगठन अमेरिका के ओम वर्मा व डॉ. मेनपाल राणा का इस भरपूर सहयोग रहा। डिम्हो ने मप्र के शिक्षक गोपाल कौशल के नवाचारों को बच्चों के लिए अभिनव व रोचक बताकर प्रशंसा की।

नवाचार बुकलेट लेते सत्यमेव जयते संस्था के प्रतिनिधि।

सरकारी शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने के लिए सराहनीय कदम

इस अवसर पर राज्यमंत्री बेदी ने सभी शिक्षकों का स्वागत करते हुए कहा कि नवोदय क्रांति द्वारा आयोजित किया गया यह शिविर सरकारी शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने के लिए सराहनीय कदम है। उन्होंने नवोदय क्रांति के संस्थापक संदीप डिम्हो की प्रशंसा करते हुए कहा कि पूरे देश के शिक्षकों को एक मंच पर ला कर सरकारी शिक्षा को बढ़ावा देकर बेहतर बनाने का कार्य प्रशंसनीय है।

ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਸੱਚ ਦੀ ਪਟਾਰੀ
www.sachdipattari.com

ਯੂ.ਐਸ.ਏ ਦੀ ਗੁਰੂਸੰਬਨਮ ਅਤੇ ਭਾਰਤ ਦੇ ਨਵੋਦਿਆ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਪਰਿਵਾਰ ਵੱਲੋਂ ਗੁਰਦਾਸਪੁਰ ਦੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਸਨਮਾਨਿਤ ਕੀਤਾ

ਗੁਰਦਾਸਪੁਰ, 6 ਫਰਵਰੀ (ਦੀਪ)

ਸਰਕਾਰੀ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੀ ਤਿੰਨ ਰੋਜ਼ਾ ਨੈਸ਼ਨਲ ਕਾਨਫਰੰਸ ਅਮਿੱਟ ਯਾਦਾਂ ਛੱਡਦੀ ਸੰਪੰਨ

ਵਧੀਆ ਕਾਰਗੁਜ਼ਾਰੀ ਵਾਲੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਨੈਸ਼ਨਲ ਤੇ ਸਟੇਟ ਅਵਾਰਡ ◆ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਸੂਬਿਆਂ ਦੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਦੀਆਂ ਵੰਨਗੀਆਂ ਕੀਤੀਆਂ ਪੇਸ਼ ◆ ਨਵੋਦਿਆ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਪਰਿਵਾਰ ਦੇ ਇਸ ਉਦਮ ਨਾਲ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲੇਗੀ ਨਵੀਂ ਊਰਜਾ : ਸਮਰਾ, ਮਹਾਜਨ

ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਸੱਚ ਦੀ ਪਟਾਰੀ
www.sachdipattari.com

ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ, 4 ਫਰਵਰੀ (ਰੇਸ਼ੂ)

शिक्षा सौरभ ई-पत्रिका मध्यप्रदेश में प्रकाशित समस्त नवाचार एवं बाल साहित्य संबंधित रचनाकारों द्वारा उपलब्ध कराई गई है, यदि भविष्य में प्रतिलिप्याधिकार संबंधित कोई विवाद उत्पन्न होता है, तो संबंधित रचनाकार स्वयं जिम्मेदार होगा; संपादक मण्डल किसी भी प्रकार के विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होगा।

आंकलन एवं मुद्रक : सैफ़ प्रिंटिंग प्रेस, बड़वानी (म.प्र.) 9406633222